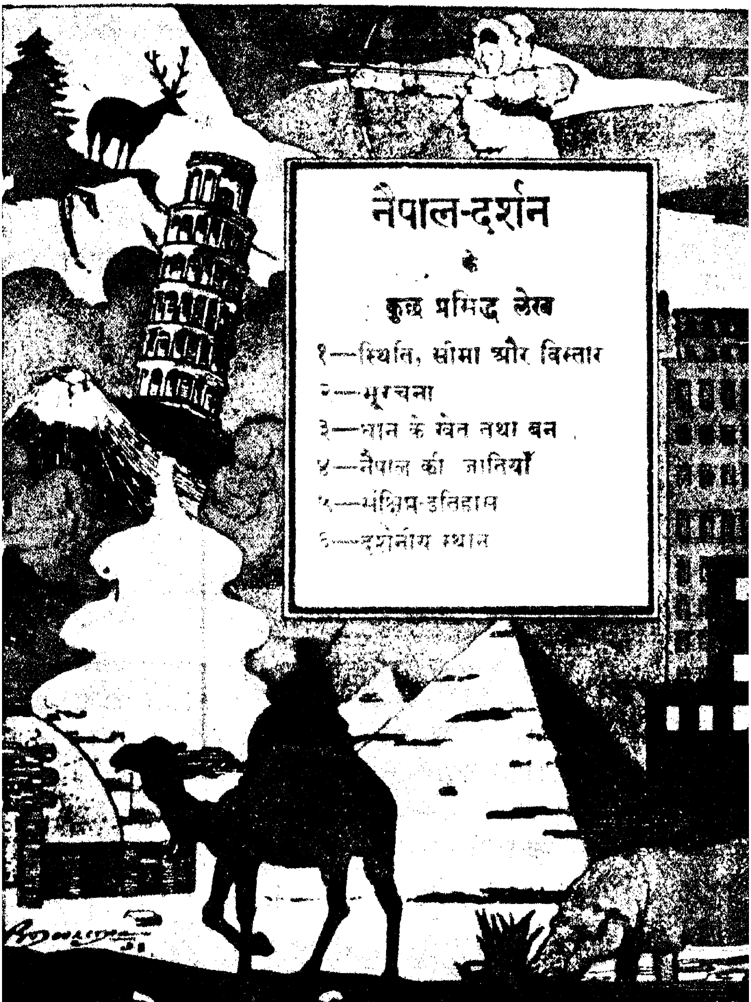
देश दर्शन

पूर्ण संख्या—४७



नैपाल-दर्शन

के

कुछ प्रसिद्ध लेख

भूगोल कार्यालय — प्रयाग

अगस्त, १९४३]

देश-दर्शन

[भाद्रपद २०००

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष ५] संख्या ३
पूर्ण संख्या

सं० कृष्णनारायण मिश्र, बी० ए०

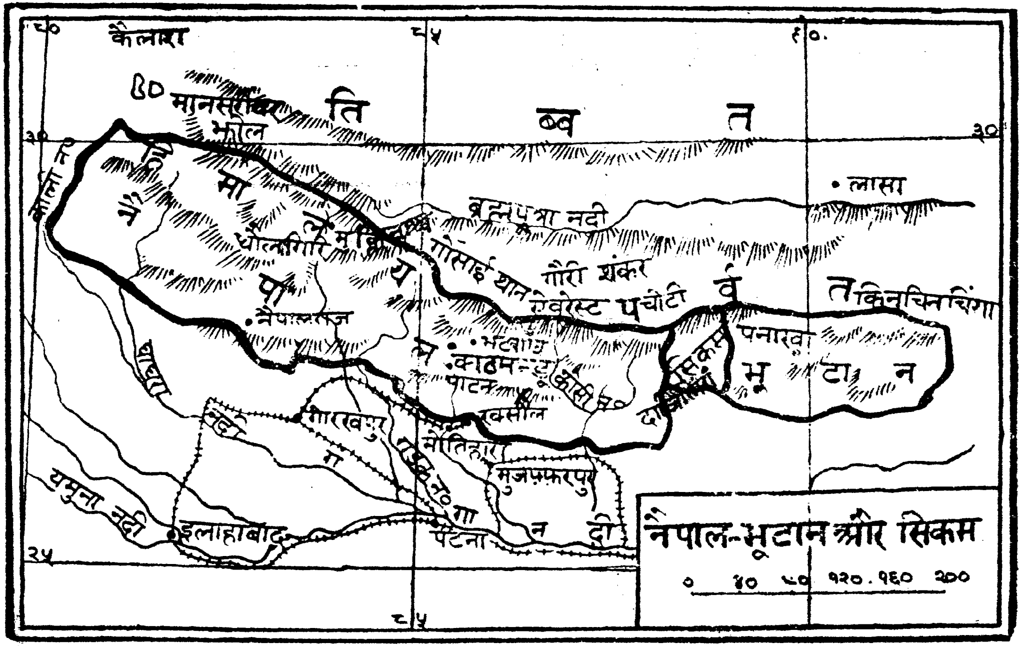
प्रकाशक

कूर्मांचल कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs. Rs. 4/-
Foreign Rs. 6/-
This copy As. -/6/-

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
इस प्रति का ।=)

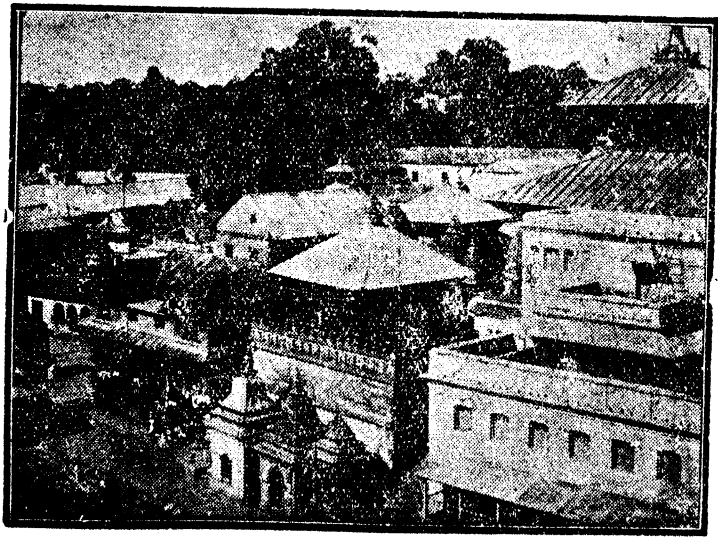
विषय-सूची



नैपाल शिकम और भूटान



नैपाल का एक पहाड़ी पुल। यह पुल हिन्दुस्तान से काठमाँडू को
जाते समय कुलीखाने में पड़ता है।



पशुपतिनाथ जी का मन्दिर



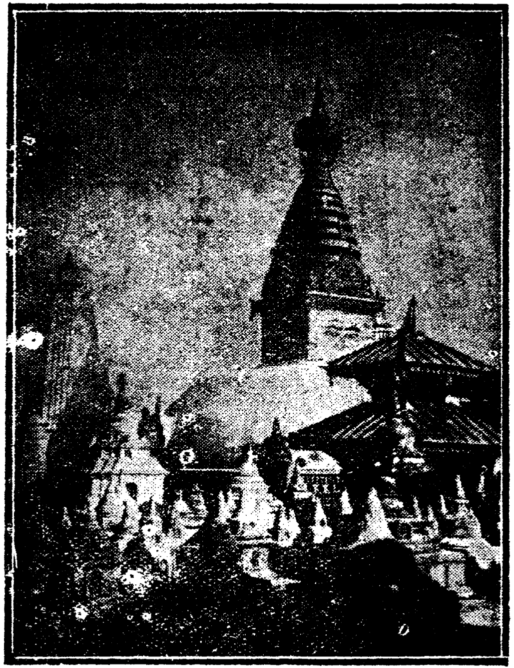
बुद्ध भगवान का मन्दिर



भाट गांव का पांचतल्ला मन्दिर



दत्तात्रेय का मन्दिर



शंभु भगवान का मन्दिर

स्थिति

स्थिति, सीमा और विस्तार

वास्तव में नैपाल नाम काठमांडू नगर के पास-पड़ोस वाली भूमि का है। परन्तु आज कल नेपाल का अर्थ गोरखाराजा के समस्त राज्य का है। नेपाल राज्य हिमालय पर्वत के दक्षिणी ढाल के मध्यवर्ती भाग में स्थित है। यह ८० अंश पूर्वी देशान्तर से ८८ अंश पूर्वी देशान्तर तक फैला है। इसकी दक्षिणी सीमा होकर २६° उत्तरी अक्षांश रेखा और उत्तरी सीमा होकर ३० उत्तरी अक्षांश रेखा जाती है। नैपाल राज्य की उत्तरी सीमा तिब्बत सीमा को छूती हुई चलती है। उत्तरी सीमा का प्रदेश पहाड़ी और उजाड़ है। पश्चिम की ओर से काली या सारदा नदी नैपाल को संयुक्त प्रान्त के कमायूं ज़िले से अलग करती है। इसके दक्षिण-पश्चिम और दक्षिण की ओर पीलीभीत, खीरी, बहराइच, गोंडा, बस्ती, गोरखपुर, चम्पारन, मुजफ्फपुर, दरभङ्गा, भागलपुर और पूर्निया के ज़िले स्थित हैं। इस राज्य की पूर्वी सीमा मेची नदी, सिंगाता की ऊंची भूमि और शिक्कम की पहाड़ी बनाती है। नैपाल राज्य

की लम्बाई पश्चिम से पूर्व को लगभग ५२० मील है। सब से अधिक चौड़ाई दक्षिण से उत्तर १४० मील और औसत चौड़ाई ९० से १०० मील तक है। इस प्रकार नेपाल राज्य के उत्तर में तिब्बत, पूर्व में सिकम राज्य और मेची नदी दक्षिण में बिहार, तथा संयुक्त प्रान्त और पश्चिम में सारदा नदी तथा कमायूं का जिला है। इस राज्य का क्षेत्रफल लगभग ५४ हज़ार वर्गमील और जनसंख्या लगभग ५६ लाख है।



सूचना

नैपाल की भूमि बहुत नीची ऊँची है। यहां की ऊंची चोटियों में माउंट एवरेस्ट (दूध गंगा) २९१५० फुट ऊंची है। यह चोटी समस्त संसार में सब से अधिक ऊँची है। नैपाल की उत्तरी सीमा की समस्त पर्वतीय श्रेणी सदैव बरफ रहने वाले धरातल से अधिक ऊंची है। नैपाल की समस्त प्रसिद्ध चोटियां सांपू या ब्रह्मपुत्र नदी के जलविभाजक वाली भूमि के दक्षिण स्थित हैं। यह जल विभाजक वाली भूमि भारत और तिब्बत के मध्य-वर्ती पहाड़ी सीमा की रीढ़ की हड्डी है। ऊंची चोटियां जलविभाजक से मिली हुई हैं। इन्हीं पर्वतीय चोटियों से स्वतंत्र पर्वतीय श्रेणियां निकलती हैं जो कर्नाली, गंडक और कोसी नदियों के बेसिन की सीमा का काम करती हैं। इन नदियों के बेसिन दक्षिण की ओर ढालू हैं और चोटी पर चौड़े हैं। इसी चौड़े भाग पर नदियों के बेसिन सांपू नदी के बेसिन से अलग होते हैं। यह बेसिन सांपू बेसिन से उसी प्रकार मिले हैं जिस प्रकार कि पंखे के हाथ चक्के से मिले रहते हैं। आपी, दिवालगिरि, गोसैं-थान और कंचनचिंगा चोटियों और इनकी भुजाओं के ढाल भी उपर्युक्त

बेसिनों की भांति हैं। ढालों पर बहुत सी छोटी छोटी पहाड़ी नदियां हैं। आगे चलकर यही छोटी छोटी नदियां मिलकर कुनोली, गंडक और कोसी तीन बड़ी नदियां बन जाती हैं।

काठमांडू की घाटी का पानी बाघमती नदी द्वारा बहता है। बाघमती नदी काठमांडू नगर के उत्तरीय पहाड़ियों से निकलती है। नैपाल की तराई में कई एक पहाड़ी श्रेणियां तथा नदिया हैं जिनकी ऊंचाई एक दूसरे से भिन्न है। इन घाटियों में सुम्ता, काठमांडू, पोखरा, धंग और चितवान की घाटियां वर्णनीय हैं।

साधारण रूप से नैपाल राज्य चार प्रधान कटिबंधों में बंटा है। १—तराई २—धून्स या मरिस ३—पहाड़ी देश ४—अधिक ऊंचा प्रदेश या आलस प्रदेश।

१—तराई घास और बनों की एक पट्टी है और इसकी चौड़ाई १० से ३० मील तक है। साल के बन के आगे धून्स बलुहे पत्थर की श्रेणी है। यह श्रेणी समुद्र धरातल से २ से ३ हज़ार फुट तक ऊँची है। बलुही पहाड़ी के नीचे धून्स या मारिस की घाटियां हैं जो समुद्र धरातल से ढाई हज़ार फुट की ऊंचाई पर हैं।

धून्स के उत्तरी सिरे से हिमालय की प्रधान श्रेणी उत्तर की ओर निकलती है। इस प्रदेश में एक के पश्चात् दूसरी कई एक पहाड़ियां हैं जो ११ हज़ार फुट तक ऊँची हैं।

नैपाल का चौथा कटिबन्ध आलस पर्वतों का है। नैपाल के हिमालय में कई एक पहाड़ी दर्रें हैं जो तिब्बत को जाते हैं परन्तु अधिक ऊंचाई पर होने के कारण ये दर्रें वर्ष के अधिकांश भाग में बन्द रहते हैं और केवल गर्मी के दिनों में खुलते हैं।

दर्रें

नैपाल के हिमाल पर्वत में कई एक घाट (दर्रें) हैं। तकलाखार दर्रा नन्दा देवी और धौलगिरि पर्वत के बीच में स्थित है। कर्नाली नदी तकलाखार घाट होकर ही तिब्बत से नैपाल राज्य में प्रवेश करती है। कर्नाली नदी घाघरा या सर्यू नदी की एक शाखा है।

मस्तांग घाट (दर्रा) धौलगिरि पर्वत से ४० मील पूर्व की ओर स्थित है। इस घाट होकर मस्तांग को मार्ग जाता है। मस्तांग नगर धौलगिरि के नीचे बसा

है। मस्तांग जाने वाली सड़क पर मुक्तिनाथ का पवित्र तीर्थ स्थान है। इस स्थान पर नैपाल, तिब्बत और भारतवर्ष के तीर्थ यात्री दर्शन के लिये आते हैं। मस्ताँग से मुक्तिनाथ पहुंचने में आठ दिन और वेणी शहर से चार दिन लग जाते हैं। वेणी शहर मालीबान प्रान्त की राजधानी है।

गोसेनथान के पूर्व कुटी घाट और पश्चिम के रोंग घाट स्थित हैं। यह दोनों घाट काठमांडू से समीप हैं इसीलिये तिब्बत के तीर्थ यात्री इन दर्रों का प्रयोग अधिक करते हैं। केरीग दर्रों होकर मार्ग सरल है और टट्टू तथा खच्चर सामान लेकर जा सकते हैं। कुटी दर्रा का मार्ग दुर्गम तथा कठिन है। उस मार्ग होकर टट्टू नहीं जा सकते हैं। परन्तु कुटी दर्रा की दूरी केरोंग दर्रे की अपेक्षा काठमाँडू नगर से कम है। इसी कारण कुटी दर्रा अधिक चालू है। लासा की पहाड़ी सड़क कुटी दर्रे होकर जाती है।

कुटी से ४० या ५० मील पूर्व हटिया दर्रा है। हटिया दर्रे होकर अरुण नदी तिब्बत से नैपाल राज्य में प्रवेश करती है। जिन सात नदियों के मिलने

से कोसी नदी बनती है उनमें अरुण सब से बड़ी नदी है।

नैपाल हिमालय के धुर पूर्वी भाग में किंचिंचिंगा के कुछ पश्चिम वालंग या वालंचेन दर्रा है।

———

नदियों के बेसिन

नैपाल राज्य पहाड़ियों के बीच में स्थित है। इसके पूर्व में शिकम की और पश्चिम में कमायूँ की पहाड़ियां हैं। यह राज्य तीन बड़े प्राकृतिक भागों में बंटा है। राज्य में चार विशाल पहाड़ी श्रेणियां हैं। इन चारों पहाड़ी श्रेणियों में क्रमशः चार ऊँची चोटियां हैं। नन्दा-देवी चोटी की ऊँचाई २५७०० फुट, धौलागिरि की २६,८२६ फुट, गोसीनाथ की २६,३०५ फुट और किंचिंचिंगा की २८,१२६ फुट है।

यह चोटियां हिमालय पर लम्बाकार हैं और एक दूसरे के समानान्तर दक्षिण में मैदान की ओर आती हैं। नैपाल राज्य के यह तीनों विशाल प्राकृतिक विभाग चारों ओर ऊँचे पर्वतों से घिरे हैं। उत्तर की

ओर बर्फीली श्रेणी, दक्षिण को ओर बलुहे पत्थर की श्रेणियां और पूर्व तथा पश्चिम की ओर इन्हीं उपर्युक्त पहाड़ी श्रेणियों के बढ़े हुये भाग हैं।

इन तीनों विशाल विभागों में नदियों के बेसिन हैं। कई एक पहाड़ी नदियां बेसिनों में बहती हैं। नदियां मैदानों की ओर बहती हैं और बलुही-पर्वतीय श्रेणी आरम्भ होने के पूर्व ही मिल कर एक बड़ी नदी बन जाती है।

इन पहाड़ी बेसिनों के नाम उन्हीं बेसिनों के नदियों के नाम पर ही रक्खे गये हैं।

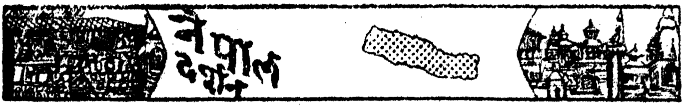
१—पश्चिमी विभाग या कर्नाली अथवा घाघरा नदी का बेसिन।

२—मध्यवर्ती विभाग या गंडक नदी का बेसिन।

३—पूर्वी विभाग या कोसी नदी का बेसिन।

इन तीन विशाल प्राकृतिक विभागों के अतिरिक्त दो विभाग नैपाल की घाटी तथा तराई और हैं। नैपाल घाटी त्रिभुजाकार है और गोसी नाथ पहाड़ी श्रेणी द्वारा बनती है। इस घाटी की मुख्य नदी बाघमती है।

बर्फीली श्रेणी से बहने वाली नदियां जो घाटी



बनाती हैं वह घाटी निचले भाग में बड़ी उपजाऊ तथा घनी बसी है।

सब से अधिक सघन बस्ती उन घाटियों की है जो ४,००० फुट की ऊँचाई पर हैं। परन्तु १३,००० फुट की ऊँचाई तक खेती होती है।

काली या शारदा, कर्नाली, राप्ती, गंडक, बाघमती, कोसी और मिचो नैपाल राज्य की बड़ी बड़ी नदियां हैं।

पश्चिमी विभाग में से डोटी और गोरखा के अतिरिक्त दूसरी जातियां बसी हैं। पहले यह भाग २२ छोटे छोटे राज्यों में बंटा था। बाइसों मिलकर बाइसी राज्य के नाम से प्रसिद्ध थे। इनके नाम जूम्ला, जग्रीकोट, चेन, अचम, सघम, मुसीकोट, रोल्पा, मलीजंत, बन्हंग, दक्लेख, दारिमेका, डोटी, सलयान, बास्फी, मेलिआंता, जेहारी, कालागांव, गोरियाकोट, गुटाम, गाजुर, जजरकोट और बिलासपुर थे।

मध्यवर्ती बिभाग को नेपाली लोग सप्त गंडकी के नाम से पुकारते हैं। सप्तगंडकी का अर्थ सात गंडक वाली है। बरिजाई, नारायणी, स्वेती गंडकी, मरीसंगदी,

दरम्दो, गंडी और त्रिशूली नाम सातों गंडकी नदियों का है।

मगर तथा गुरुंग जातियां मध्यवर्ती विभाग में रहती हैं। ब्रिटिश सेना के अधिकांश सैनिक इसी विभाग के हैं। पहले मुख्य गोरखा राज्य के अतिरिक्त इस विभाग में चौबीस राज्य भी शामिल था। चौबीस राज्य में २४ अलग अलग छोटे छोटे राज्य शामिल थे।

लाम्जूंग, टानहुँग, गाल्कोट, मालिबाम, सायूंग, गारूंगिसिंग, घिरिंग, देवराली, पाल्पा, पोखरा, बीरकोट, भुटबाल, गूल्मी, नुवाक्योट, काशी, इस्मा, धारकोट, अर्घप्यूंग, लटहुँग, कैखो और प्यूथान चौबीसों राज्य के नाम हैं।

चौबीसा और बाइस राज्यों के राजघराने के प्राणी अब भी राज्य घराने के माने जाते हैं। गोरखा लोगों ने मध्यविभाग को ५ प्रान्तों में विभाजित किया और १—मालिबास, २—कासी, ३—पाल्पा, ४—गोरखा-पूर्वी और ५—पोकूरा उत्तरी उनका नाम रक्खा।

समस्त पूर्वी विभाग में कोसी नदी की ७ सहायक

पहाड़ी नदियां बहती हैं। इन सातों नदियों के कारण ही इसका नाम सप्त कोसी कोसिकी है।

सप्त कोसी नदियों के नाम मिलाम्ची, सून कोसी तांबा कोसी, लिक्खू, दूध कोसी, अरुण और थाम्बर हैं।

यह सभी नदियां बर्फीले प्रदेश के समीप से निकलती हैं और एक दूसरे के समानांतर बहती हैं। वाशीक्षत्र स्थान पर सातों नदियों का संगम हो जाता है। संगम होने के पश्चात् बड़ी कोसी नदी बनती है। यह कोसी नदी भागलपुर के समीप गंगा से मिल जाती है। सप्त कोसी नदियों में अरुण नदी सब से बड़ी नदी है।

कोसी नदी का पहाड़ी बेसिन अरुण नदी द्वारा दो प्रान्त में बंट जाता है। दायें तट पर पश्चिम की ओर अरुण और दूध कोसी के बीच किरांती (राय) लोगों का देश है। किरांती लोगों की गणना हिन्दुओं के नीच वर्ण में होती है। यह पहाड़ी जाति है। पहले यह जाति बड़ी प्रभुत्वशाली थी।

तराई का निचला प्रदेश नैपाल के सब से बाहरी पर्वतों तथा ब्रिटिश भारतीय सीमा के मध्य स्थित है।

इस प्रदेश में बन तथा घास के जंगल हैं। कुछ भाग में दलदल भी हैं। इस प्रदेश में खेती होती है। तराई के पूर्व में मिची और पश्चिम में शारदा नदी है। तराई की सब से अधिक चौड़ाई ३० मील है।

नैपाल को घाटी चारों ओर पूर्ण रूप से पहाड़ों से घिरी है। पर्वतों को ऊंचाई ५ हज़ार से ८ हज़ार फुट तक है। घाटी का आकार अंडाकार है। नैपाल घाटी की औसत लम्बाई १५ मील और चौड़ाई १३ मील है। इसका क्षेत्रफल २५० वर्ग मील है।

नैपाल घाटी बहुत घनी बसी है। इसकी जनसंख्या ३ लाख है। अधिकतर मुर्मिस और नेवार वर्ण के लोग हैं। घाटी में असंख्य धाराएं बहती हैं। सभी धाराएं बाघमती में गिरती हैं। इसी घाटी में नैपाल की राजधानी काठमंडू स्थित है।

———



धान के खेत तथा वन

रक्सौल नगर बिहार और नेपाल की सीमा पर स्थित है। इस नगर के दक्षिण की ओर बिहार के धान के खेतों का मैदान और उत्तर की ओर नेपाल के धान के खेतों का बड़ा मैदान स्थित है। नेपाल के धान के खेतों तथा बनों का बड़ा मैदान हिमालय की घाटी तथा बिहार सीमा के मध्य पूर्व से पश्चिम की ओर लगभग २०० मील लम्बा है। यह बड़ा मैदान तराई के नाम से प्रसिद्ध है। अप्रैल से नवम्बर तक इस भाग में मारक मलेरिया ज्वर का प्रकोप रहता है इसलिये शीतकाल में ही तराई में जाने योग्य होता है।

रक्सौल से तराई की ओर एक छोटी मिटरगेज रेलगाड़ी जाती है। रक्सौल नगर के बाहर निकलते ही धान के खेतों का मैदान आ जाता है। धान के मैदान के आगे बन है जहाँ शेर तथा गैंडे निवास करते हैं। नेपाल की तराई के बनों में अधिकतर साल के वृक्ष हैं। इसका तना पतला काला होता है। पत्तियां चौड़ी होती हैं। कहीं कहीं सागौन के वृक्ष हैं जो बड़े विशाल हैं। जिस प्रकार की लताएं वृक्षों पर बेल-बूटों की भांति फैली

हुई हैं। ताड़, नारियल और केलों के वृक्ष भी कहीं कहीं पाए जाते हैं। बनों के बीच में कई एक पहाड़ी नदियां भी पाई जाती हैं जो शीतकाल में सूख जाती हैं।

नैपाल की तराई में कई प्रकार का धान उत्पन्न होता है। चावल की उपज नैपाल में बहुत होती है। फल-फलारी भी कई भांति के होते हैं। बङ्गाली लोगों की भांति नैपाली लोग भी चावल खाने के अधिक आदी होते हैं।

उत्सव

गोरखा लोग प्रायः उन्हीं त्योहारों को मानते हैं जो हमारे भारतवर्ष में हिन्दू समाज के बीच प्रचलित हैं। भारतवर्ष की भांति होली, दशहरा और दीवाली के त्योहार वहां भी बड़े उत्सव के साथ मनाये जाते हैं। दशहरा के समय समस्त देश में चंडी, देवराली और दुर्गा की पूजा होती है। कुछ लोग रामायण का पाठ करते हैं। रामलीला भी होती है। दशहरा गोरखा जाति का मुख्य त्योहार है। यूं तो प्रत्येक घर में प्रत्येक प्राणी इस शुभ अवसर पर उत्सव मनाता है परन्तु वृहद



रूप में यह नियत स्थानों तथा मंदिरों पर मनाया जाता है। इस अवसर पर भैंसे और बकरों का बलिदान चंडी देवराली और दुर्गा को चढ़ाया जाता है।

गोरखा सैनिक भी इस त्योहार को बड़े समारोह के साथ मनाते हैं। त्योहार के लिये सेना का प्रत्येक सिपाही और अफसर कुछ न कुछ चंदा देता है। सेनापति एक या दो भैंसे देता है। सेना के सभी अस्त्र-शस्त्र एकत्रित कर दिये जाते हैं और चारों ओर डेरे गाड़ दिये जाते हैं। एक बड़े मैदान में यह उत्सव होता है वहीं भैंसों तथा बकरों का बलिदान किया जाता है। दशहरे का समय युद्ध और नया कार्य आरम्भ करने के लिये बड़ा शुभ माना जाता है। दशहरे के समय सेना में भी १० दिन की छुट्टी सैनिकों को मिलती है। असोज मास के शुक्ल पक्ष की दशमी को विजयादशमी होती है।

विजयादशमी के २० दिन के पश्चात् कार्तिक की अमावस्या को दीवाली या दीपावली का उत्सव मनाया जाता है। दीवाली के शुभ अवसर पर भारतवर्ष की भांति नैपाल में भी लोग लक्ष्मी की पूजा करते हैं

और अपने घरों को दीवों से प्रकाशित करते हैं। समस्त रात जुवा खेला जाता है। दीवाली के समय तीन रात दिन जुवा खेलने की आज्ञा सरकारी तौर पर रहती है। नैपाल में भी जुवा खेलने के बड़े बड़े नशेबाज लोग हैं जो अपनी स्त्री को भी जुये की बाज़ी पर लगा देते हैं। कहा जाता है कि एक बार एक व्यक्ति ने अपना समस्त धन हार जाने पर अपना बायां हाथ काट कर कपड़े में लपेट कर जुये के दांव पर लगा दिया। भाग्यवश उसकी बाज़ी जीत गई तो उसने अपने विरोधी से बायां हाथ काटने का आग्रह किया। हाथ न काटने पर जीता हुआ धन लौटाने पर वह राज़ी हुआ।

दशहरा या दुर्गापूजा का उत्सव दुर्गा देवी की उस विजय की स्मृति में मनाया जाता है जो देवि ने महासुर पर प्राप्त की थी। यह उत्सव १० दिन तक होता है। प्रथम दिन ब्राह्मण अपने पूजा के स्थान पर जौ बोते हैं और प्रतिदिन पवित्र जल से उसे सींचते जाते हैं। दसवें दिन ब्राह्मण लोग उस जई को अपने धर्म के मानने वालों को देते हैं। उन्हें उसके बदले में दक्षिणा मिलती है।

गोरखा लोग दशहरे के उपलक्ष में अपने अस्त्र-शस्त्रों तथा तमगों की पूजा करते हैं। वह समस्त वर्ष अस्त्र शस्त्रों की रक्षा की प्रार्थना करते हैं। गोरखा लोगों का विश्वास है कि तलवार की बदौलत ही उनका जीवन सुखमय बना हुआ है।

जन्माष्टमी का त्योहार कृष्ण भगवान के जन्मोत्सव में हमारे देश की भांति ही मनाया जाता है। यह भादों की कृष्ण पक्ष की अष्टमी को मनाया जाता है।

होली का त्योहार नैपाल में फागुन मास की पूर्णिमा के आठ दिन पहले और शिवरात्रि के उत्सव के आठ दिन पश्चात् मनाया जाता है। राजमहल तथा घरों के सामने एक लकड़ी का स्तम्भ गाड़ा जाता है जिसे "चिर" कहते हैं। यह राजमहल के पुराने झंडों से सजाया जाता है। रात के समय यह जला दिया जाता है। यह होलिका व्यतीत हुये वर्ष को जलाने को सूचक है। चैत्र मास के प्रथम दिन धुरेहड़ी होती है जब कि सभी लोग नये वस्त्र धारण करते हैं, रंग खेलते हैं और सुन्दर-स्वादिष्ट भोजन करते हैं। और आने वाले वर्ष के लिये प्रसन्नता प्रकट करते हैं।

इनके अतिरिक्त बसंत पंचिमी बसंत ऋतु की खुशी में, शिवरात्रि, सावन संक्रांति, रिकी तरपन और माघी संक्रांति आदि के त्योहार मनाये जाते हैं।

यह सभी त्योहार भारतवर्ष की भांति ही लगभग मनाये जाते हैं। नैपाल में त्योहारों के मनाने के लिये प्रत्येक व्यक्ति को नौकरी से छुट्टी मिलती है। सैनिक लाग भी दशहरे पर १० दिन, बसंत पंचिमी पर एक दिन, शिवरात्रि पर एक दिन, होली पर ८ दिन, सावन संक्रांति पर एक दिन, रिको तरपन पर एक दिन, जन्म अष्टिमी पर एक दिन, माघो संक्रांति पर एक दिन और दीवाली पर चार दिन की छुट्टी पाते हैं। इन छुट्टियों में किसी प्रकार भी कमी नहीं की जा सकती है।

भोजन

नैपाल राज्य में जहां तक भोजन का सम्बन्ध है केवल दाल-चावल में ही जाति-पांति का ख्याल किया है। इसके सिवा और दूसरे प्रकार के भोजन सभी गोरखा एक साथ बैठ कर करते हैं। भोजन बनाने तथा

करने के समय भारतवर्ष के सनातनी हिन्दुओं की भांति कपड़े उतारने की आवश्यकता नहीं है। लिम्बूस, राय तथा सनवार सभी वर्ण के लोग कपड़ा पहिन कर भोजन करते हैं। केवल खास लोग ही भोजन बनाते या करते समय टोपी और जूता उतारते हैं। उपाध्याय ब्राह्मण के हाथ का बनाया हुआ भोजन (दाल-चावल घी) सभी जाति वाले खाते हैं। यदि जायसी ब्राह्मण दाल-भात तयार करता है तो मगर और गुरंग जाति के लोग उसे नहीं खाते। उच्चश्रेणी उच्च वर्ग के लोग नीचे वाले वर्गों के साथ दाल-भात नहीं खा सकते। सेना में भी गोरखा लोग अपना अपना अलग अलग छोटे छोटे भोजनालय स्थापित कर लेते हैं। जब तक अविवाहित रहते हैं वह साथ बैठ कर भोजन पाते हैं। सभी गोरखा "शिकार" एक साथ बैठ कर खा सकते हैं। "शिकार" शब्द प्रत्येक भांति के मांस के लिये प्रयोग होता है।

केवल कुछ नीच वर्गों को छोड़ कर कोई भी गोरखा गाय, बकरी और नील गाय का मांस नहीं खाता है। गुरुंग वर्ग के लोग अपने देश में भैंसे खाते

हैं यद्यपि पूछने पर वह भैंसे का मांस खाने से इन्कार करते हैं।

गोरखा लोग प्रत्येक भांति के हिरण, पक्षी, सुवर आदि का शिकार करते हैं। मगर, गुरुंग, लिम्बूस, राय और सनवार लोग विवाह होने के पूर्व प्रत्येक भांति का भोजन एक साथ बैठ कर खाते हैं परन्तु ब्याह होने के पश्चात् वह चावल और दाल एक साथ बैठकर नहीं खा सकते हैं। दाल को छोड़कर सभी प्रकार का घी में पकाया हुआ (चावल भी) भोजन एक साथ बैठ कर खाया जाता हैं।

ठाकुर जिनका यज्ञोपवीत नहीं हुआ है वह मगर और गुरुंग वर्ग के साथ प्रत्येक भांति का भोजन कर सकते हैं। बकरे के चमड़े के बने हुये मसक का पानी प्रत्येक वर्ग के लोग पीते है।

गोरखा लोग प्रत्येक भांति के फल तथा साग तरकारी खाते हैं। वह लहसुन और मिर्चा को खाने के लिये बड़ा ज़ोर देते हैं। वह आलू, कद्दू, गोभी और कूकम्बर बहुत पसंद करते हैं। गोरखा सैनिक किसी भाँति की भी अंग्रेज़ी मदिरा पान कर सकता है।

गोरखा लोग चावल मे जाऊर, शराब तथा रक्षी तयार करते हैं। जाऊर और रक्षी पेय वस्तुएं हैं। तम्बाकू भी गोरखे खूब पीते हैं। चेरूट के वह बड़े शौक़ीन होते हैं।

गोरखों की रीति

गाय मारने और हत्या करने पर नैपाल राज्य में फांसी या प्राणदंड का रिवाज है। गाय को चोट पहुंचा कर ज़ख्मी करने, लंगड़ा करने और मनुष्य को गहरी चोट पहुँचाने पर आजन्म कारावास की सज़ा दी जाती है। इनके सिवा और दूसरे हिंसात्यक कार्यों के लिये सज़ा और जर्माना होता है। नैपाल में क़ैदियों से प्रत्येक भांति का काम कराया जाता है। उन्हें भोजन तथा क़ैदी कपड़ा पहिनने को मिलता है। काम करने के पश्चात् जब वे जेल को वापस होते हैं तो उन्हें ताकने वाला कोई भी नहीं रहता फिर भी आश्चर्य की बात है कि वे जेलों में सीधे वापस चले जाते हैं।

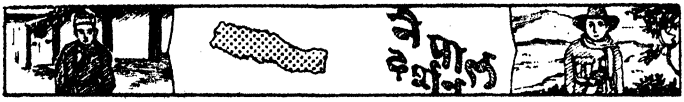
नैपाल में यदि कोई नीची जाति का व्यक्ति किसी उच्च जाति का बनने का बहाना करता है और उच्च

जाति के व्यक्ति को अपने घर में भोजन देने अथवा पानी पिलाने के लिये धोका देकर कोशिश करता है तो उसको कड़ी सज़ा दी जाती है। जुर्माना किया जाता है या उसकी सम्पत्ति छीन ली जाती है या उसे ग़ुलाम बना कर बेंच दिया जाता है। इस प्रकार का दोषी प्रोहित को दंड देने तथा प्रायश्चित्त करने पर पुनः अपनी जाति में ले लिया जाता है।

ब्राह्मण और स्त्री को प्राण दंड की सज़ा नहीं दी जाती है। इन्हें कड़ी से कड़ी सज़ा आजन्म जेल में व्यतीत करने की सज़ा दी जा सकती है। ब्राह्मण को अपनी जाति से भी बुरा कर्म करने पर अलग होना पड़ता है।

जब गोरखा जाति के लोग सैनिक सेवा अथवा विदेश से लौटकर आते हैं तो उन्हें प्रायश्चित रूप में ३) (नैपाली) देना पड़ता है। इसकी उन्हें पक्की रसीद दी जाती है।

कोई भी व्यक्ति ६०) किसी दूसरे व्यक्ति से ऋण लेने पर उसका बांद बन जाता है और फिर वह उसके यहां केवल भोजन पर ही दो वर्ष तक काम करता है।



दो वर्ष के समय के समाप्त होने पर वह फिर स्वतंत्र हो जाता है।

नैपाल में गुलामी का बड़ा रिवाज है और धनी लोगों के यहाँ कई एक कनारा (गुलाम) होते हैं। बहुत से तो उत्पत्ति से ही गुलाम होते हैं परन्तु कितने ही वंश जुर्म करने पर गुलाम बनाकर बेंच दिये जाते हैं। स्त्री के गुलाम होने का मूल्य १५० रुपये से २०० रुपये तक और मर्द का १०० से १५० रुपये तक होता है। गुलामों के साथ अच्छा व्योहार किया जाता है। यदि किसी गुलाम स्त्री के उसके मालिक से बच्चा पैदा हो जाता है तो वह स्वतंत्र होने का दावा कर सकती है।

नैपाल में ज्योतिषी लोगों की संख्या अधिक है। इनमें कुछ पुरोहित का काम भी करते हैं। प्रत्येक कार्य के लिये ज्योतिषी से शुभ साइत का विचार कराया जाता है।

नैपाल में वैद्य या डाक्टर बहुत हैं। लगभग प्रत्येक वंश का एक डाक्टर या वैद्य होता है।

सेवा में समीपवर्ती रिश्तेदार की मृत्यु होने पर

सैनिक को १३ दिन की छुट्टी प्रदान की जाती है। १३ दिन में उसका मृतक संस्कार समाप्त होता है। भारतवर्ष की भांति वहां भी सूदक में बाल बनवाने का रिवाज है। अधिकांश नैपाली जातियों में मृतक शरीर के गाड़ने या जलाने का रिवाज है।

भारतवर्ष की भांति नैपाल में भी सम्पत्ति के उत्तराधिकारी हुआ करते हैं। सम्पत्ति का बड़ा भाग ज्येष्ठ पुत्र को मिलता है। छोटे लड़कों तथा विधवा स्त्री को भी सम्पत्ति का कुछ भाग दिया जाता है।

नैपाल में बेगार (बिना मज़दूरी के काम कराना) प्रथा प्रचलित है। तीन प्रकार की बेगार ली जाती है। १—बेगारी-कुली लोग सरकारी, सेना, गवरनर या अफसर का सामान ले जाने के लिये बुला लिये जाते हैं और उनसे उसी प्रकार काम लिया जाता है जैसे भारतवर्ष में दौरे पर सिविल अफसर लोगों को पकड़ कर काम लेते हैं।

झरिया एक दूसरे प्रकार की बेगार है। इस प्रथा के अनुसार सरकार मज़दूरों को पकड़ कर सड़क, पुल, बैरेक बनाने और घास एकत्रित करने के काम में लगाती

है। इस काम के लिये मज़दूर दो हफ्ता, तीन हफ्ता या इससे भी अधिक समय के लिये पकड़े जाते हैं। इन दो प्रकार की बेगार के लिये सरकार की ओर से आज्ञा स्थानीय हाकिमों को दी जाती है और वे गांव के मुखिया के द्वारा मज़दूर प्राप्त करते हैं।

बेती नामक बेगार गांव का मुखिया अपने लिये लेता है। वह प्रत्येक व्यक्ति को साल में एक दिन के लिये अपने काम के लिये अपने काम में पकड़ सकता है। यही बेती उसका सालाना सरकारी वेतन है।

हिन्दू जाति की भांति गोरखा जाति भी अंध विश्वासी है। प्रत्येक भांति के कष्ट आने तथा बीमारी उत्पन्न होने पर गोरखा लोगों का यही ख्याल होता है कि कोई देवी या भवानी अप्रसन्न हो गई है उसी के कारण वह संकट उत्पन्न हो गया है। वह भूत-पिशाच, देव तथा राक्षसों में भी विश्वास करते हैं। दिवोराली, चंडी और देवी तथा भवानी की पूजा गोरखा लोग अधिक करते हैं। यदि कोई महामारी (हैज़ा, प्लेग और चेचक, शीतला) की बीमारी हो जाती है तो फिर वह उसे किसी भवानी की अप्रसन्नता ही

समझते हैं और फिर उस देवि को प्रसन्न करने के लिये उसे भेंट आदि चढ़ाते हैं।

एक बार गोरखपुर की नैपाली फौज़ में एक नैपाली स्त्री हैज़ा से मर गई। उसकी मृत्यु पर प्रत्येक गोरखा अफसर और सैनिक ने आपस में चंदा लगाया। उस चंदे की रकम से तीन बकरियां, तीन चिड़ियां और चार फाख्ता खरीदे गये। इसके अतिरिक्त और दूसरा भोजन भी मोल लिया गया। इनमें से एक बकरी और फाख्ता छोड़ दिये गये और फाख्ता और भोजन देवी के नाम पर फेंक दिया गया। उसके बाद शेष पशु-पक्षी बलिदान कर दिये गये उसके बाद मांस को आपस में बांट कर खालिया गया। पशु-पक्षियों को मारने के पूर्व सभी गोरखों ने एक साथ होकर प्रार्थना किया "हे देवि हम यह बलिदान तेरे लिये करते हैं तू महामारी की बीमारी से हमें दूर रख।

देवताओं और देवी भवानी के मंदिरों पर गोरखा लोग भेंट चढ़ाने तथा दर्शन करने जाते हैं और उनसे भांति भांति की मांगें मांगते हैं। दशहरा के सातवें दिन वह देवराली देवी की समाधि पर भेंट चढ़ाते हैं।



नैपाल की जातियां

नैपाल के आदि निवासी मंगोलियन जाति के हैं। उनका रूप मंगोलियन जाति से मिलता जुलता है। उनके चाल-चलन, भेष और भाषा भी मंगोलिन जाति से मिलती जुलती है। मागार, गुरुंग, नेवार, सुनवार, खम्बूस यक्का, यकथम्बस, लिम्बूस, मुर्मिस और लेप्था जातियां नैपाल की आदि जातियां हैं। खम्बू, यक्का और यक्थम्ब वर्ण किराती समूह में से हैं और मंगोलियन शाखा के हैं। प्राकृतिक बनावट में मगर, गुरंग, सनवार और राय जातियां एक दूसरे से मिलती जुलती हैं।

नैपाल के पर्वतीय प्रदेश पर हिन्दू जाति का आक्रमण कम हुआ यह ठीक रूप से निश्चित नहीं है। कमायूं का जिला जो नैपाल राज्य के पश्चिम स्थित है और बीसवीं सदी के आरम्भ में ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया वहां हिन्दू जाति के लोग निवास करते हैं। यह लोग अपनी उत्पत्ति ब्राह्मण और क्षत्रियों से बतलाते हैं। काली नदी के पूर्व निचली पहाड़ियों पर भेरी और मर्स्यान्दी नदी के मध्य प्राचीन समय में मगर जाति के लोग निवास करते थे। गुरुंग्स, सूस

और मगर जातियों के लोग बड़े लड़ाकू तथा वीर होते हैं। गोरखाली सेना में इन्हीं जातियों के लोग अधिक हैं। गुरंग जाति के लोग मगर जाति के प्रदेश तथा वर्फीले प्रदेश के मध्य निवास करते हैं। नेवार जाति के लोग काठमांडू घाटी के आदि निवासी हैं। इस जाति ने गोरखाली सेना का आक्रमण के समय डट कर सामना किया था उसी के कारण गोरखा सेना में नेवार जाति के लोग नहीं रक्खे जाते हैं। इस जाति के लोग अच्छे किसान तथा व्यापारी हैं। काठमांडू, सिकम और दारजिलिंग सीमाओं के मध्य लिम्बू, किरांती और लेप्चा जातियां रहती हैं। काठमांडू के उत्तर भूटिया, लिम्बू, किरांती और लेप्चा जातियां रहती हैं। कसवर, देनवर, थारुस जातियां निचली पहाड़ियों तथा तराइयों में रहती हैं। पहाड़ी तथा तराई वाली जातियों में गोरखाली लोग प्रधान हैं। गोरखाली जाति में पांडे तथा उपाध्याय ब्राह्मण और खुस तथा थापा क्षत्रिय लोग प्रधान माने जाते हैं। गोरखाली लोग राजपूत वंश से हैं और बारहवीं सदी में गोरी आक्रमण के समय राजपूताना से भाग कर कमायूं में

जा बसे थे। धीरे धीरे यह जाति पूर्व की ओर बढ़ती गई। गुरखा देश में जा कर यह जाति कुछ सदियों तक रही और पहाड़ी जातियों से सम्बन्ध करती रही उसके पश्चात् नैपाल की प्रधान भूमि से उनका सम्बन्ध आरम्भ हुआ। नेवर और भूटिया आदि जातियां बौद्ध धर्म को मानती हैं। नैपाल के अधिकांश निवासी हिन्दू धर्म के मानने वाले हैं। उनके मध्य प्राचीन हिन्दू रीतिरिवाज प्रचलित हैं। उनके वर्ण संस्कार आदि सभी हिन्दुओं के हैं। धीरे धीरे सभी बौद्ध हिन्दू होते जा रहे हैं।

धर्म

ईसा से ३०० वर्ष पूर्व नैपाल में बौद्ध धर्म पूर्णरूप से प्रचलित था अब भी वहां के कुछ निवासी बौद्ध धर्म के मानने वाले हैं।

खास, मगर और गुरंग जातियां हिन्दू धर्म मानती हैं। गुरुंग जाति के लोग बौद्ध धर्म की ओर अधिक झुके हैं। उनके पुरोहित अब भी थामा और गियाब्रिंग कहलाते हैं। हिन्दू धर्म समस्त नैपाल में प्रचलित है।

गोरखा लोग हिन्दू हैं। ब्राह्मण वर्ण सर्वोच्च माना जाता है। वह किसी प्रकार का पाप कर्म नहीं कर सकता। ब्राह्मण लोग यज्ञोपवीत पहिनते हैं। उत्तम तथा मध्यम वर्ण में एक दूसरे के साथ विवाह आदि करने का रिवाज नहीं है। ब्राह्मण खास के साथ और खास नीचे वर्ण वालों के साथ ब्याह नहीं कर सकते।

बच्चे के पैदा होने पर ११ दिन तक ख़ुशी मनाई जाती है और १० दिन तक बच्चे के पिता के साथ कोई (समीपवर्ती सम्बन्धियों को छोड़कर) खा पी नहीं सकता। ग्यारहवें दिन ब्राह्मण (पुरोहित) आते हैं और वह शुद्धि-संस्कार बच्चे का कराते हैं। पुत्रोत्पत्ति के समय अधिक ख़ुशी मनाई जाती है। क्योंकि वह अपने पिता की क्रिया कर्म करते हैं। पुत्री के संस्कार में जो कुछ व्यय किया जाता है वह निरर्थक ही समझा जाता है। गोरखा सैनिकों को बच्चे की उत्पत्ति के समय संस्कारों के करने के लिये ११ दिन की छुट्टी नैपाल राज्य तथा भारतवर्ष में दी जाती है। ग्यारहवें दिन उपाध्याय (ब्राह्मण) बच्चे का नामकरण करता है।

बालक को ६ महीने तक और बालिका को ५ महीने तक दूध पिलाया जाता है। ६ महीने के पश्चात् भात खिलाने का संस्कार होता है उस समय एक बड़ा भोज दिया जाता है। सभा लोग बच्चे को नाज का दाना खिलाते हैं। ब्राह्मणों को भोजन तथा दान दिया जाता है। घनिष्ट सम्बन्धी तथा मित्र बच्चे को पुरस्कार देते हैं।

५ वर्ष की अवस्था में मंगनी होती है। ब्याह निश्चय हो जाने पर बालक का पिता बालिका को सोने की एक अंगूठी देता है जो साही मुंदरी कहलाती है। ब्याह निश्चय होने के समय बालक तथा बालिका के पिता जातीय ५ या ६ मित्र एक साथ बैठकर पुरोहित के सामने ब्याह के साक्षी होते हैं। ७ वर्ष की अवस्था के बाद किसी समय भी ब्याह हो सकता है। बालिकाओं का ब्याह १३ वर्ष के पहले समाप्त होजाना अच्छा समझा जाता है। विधवा विवाह की प्रथा नैपाल में नहीं है। पुरुष अपना विवाह दोबारा स्त्री की मृत्यु के पश्चात् कर सकता है। यदि युवक तथा युवती एक दूसरे के प्रेम में पड़कर भाग जाते हैं तो वह युवती के

पिता के बिना बुलाये उसके पास लौट कर नहीं जा सकते। निश्चित समय होजाने और उसकी आज्ञा पाने पर वह उसके पास जाते हैं। वह दही और चावल से उनका तिलक करता है और वह झुककर युवती के पिता को प्रणाम करते हैं। यह रसम धोक दिम्बू के के नाम से प्रसिद्ध है। व्याह हिन्दू धर्म शास्त्र के अनुसार होता है। प्रत्येक संस्कार लामा तथा पंडित की बतलाई हुई निश्चित साइत पर होता है।

हिन्दू धर्म के मानने वाले हिन्दू धर्म के सभी देवताओं का पूजन करते हैं। वह राम और कृष्ण की उपासना करते हैं। वेद तथा शास्त्रों के अनुसार ही वह अपना कर्म करते हैं।

मुर्मिस

मुर्मिस लोगों को लामा, टमंग, इशंग और सैंग भी कहते हैं। मुर्मिस लोगों की उत्पत्ति की कथा यह है। कि किसी समय में ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों भाई शिकार के लिये निकले। समस्त दिन वह बन में टहलते रहे परन्तु उन्हें कोई भी हिरण या शिकार न

मिला। संध्या के समय एकाएक गौरी गाय उनके सामने से प्रगट हुई।

विष्णु ने गौरी गाय को देखते ही बाण मारा और वह मर गई। तीनों भाई थके मांदे तथा भूके थे इसलिये उन्होंने उसके मांस का भोजन बनाना आरम्भ किया। चमड़ा निकालने के पश्चात् उन्होंने अपने कमंडल तथा कटोरे निकाले और छोटे भाई महेश्वर को कटोरों तथा आंतों को साफ करने के लिये समीपवर्ती नदी में भेजा। ब्रह्मा और विष्णु ने मिर्च मसाला डाल कर मांस अग्नि में पकाकर तयार किया और तीन भागों में भोजन बांट दिया।

जब सब के भाग बँट गये तो ब्रह्मा ने विष्णु से कहा "भाई यह मांस तो गाय का है इसलिये हम न खायेंगे"। इस पर दोनों भाइयों ने अपना अपना भाग छिपा दिया। जब महेश्वर आंतों को साफ करके लौटे तो ब्रह्मा और विष्णु ने कहा "हम लोग बहुत भूके थे इस कारण अपना अपना भाग खा लिया है। यह तुम्हारा भाग रक्खा है। लो इसको खाकर तगड़े हो जाओ"।

महेश्वर जब अपना भाग खा चुके तो ब्रह्मा और

विष्णु ने अपना छिपाया हुआ भाग निकाल कर दिखाया और महेश्वर को गाय का मांस खाने पर भला बुरा कहने लगे।

क्रोध में आकर महेश्वर ने अंतड़ियों से ब्रह्मा और विष्णु को मारना आरम्भ किया। अंतड़ियों का कुछ भाग ब्रह्मा और विष्णु के शरीर पर लिपट गया। उसी की स्मृति में यज्ञोपवीत धारण किया जाता है। उसी समय से महेश्वर गाय का माँस भक्षण करने के कारण नीच बना दिये गये। मुर्मिस आदि लोग जो गाय का मांस खाते हैं वह महेश्वर के पुजारी तथा संतान के समझे जाते हैं। मुर्मिस या लामा लोग महेश्वर की संतान हैं। यह लोग बैल तथा गाय का मांस खाते हैं और बड़े तगड़े होते हैं। यह अच्छे किसान हैं और बोझ ढोने में अद्वितीय हैं। नैपाल राज्य में गाय तथा बैल का मारना जुर्म है अतः शायद यह लोग मरे हुये गाय, बैल का मांस खाते हैं।

मुर्मिस या लामा जाति दो भागों में बंटी है।

१—बाराथभंग २—अठाराजात

आदि काल में बाराथभंग बाजू, बाल, डुमजन

गिसिंग, जियाव, गोल, मिश्चान, कोश्चन, पकरिम सियांगदन, थिंग और योङ्गन १२ भागों में बंटी थी अब उसके कई भाग हो गये हैं।

अठाराजात के लोग तो प्रधान वर्णों में बंटे हैं।

१—गोथर, २—नर्ब, ३—सांग्रो।

गोथर वर्ण के लोग ब्राह्मण, क्षत्रिय या ठाकुर और मुर्मिस जाति से मिल कर बने हैं। गोरखा शासन होने के पश्चात् यह लोग खत्री कहलाने लगे हैं।

२—नर्ब वर्ण मुर्मी और नेवार जाति के मिश्रण से बनो है।

अठाराजाति समाज में नर्ब लोग सबसे उत्तम माने जाते हैं।

३—संग्रो वर्ण मुर्मी जाति के मगर, गुरंग, लिम्बू राय और सनवार जाति के मिश्रण से बना है।

मुर्मी जाति के लोग सेना के लिये बड़े उपयोगी हैं।

देश दर्शन

बौद्ध धर्म

बौद्ध धर्म प्राचीन हिन्दू धर्म का ही एक अंग है। जैसे जैसे समय व्यतीत होता गया हिन्दू धर्म में त्रुटियां उत्पन्न होती गईं। वैष्णव हिन्दू लोग बलिदान के विरुद्ध थे वह किसी भी पशु का बलिदान नहीं करना चाहते थे। बौद्ध भगवान विष्णु के औतार माने जाते हैं। आदि काल में बौद्ध धर्म तथा वैष्णव मत में अधिक भेद भाव नहीं था। हिन्दू धर्म में ब्राह्मणों ने मूर्ति पूजा का बहुत प्रचार कर दिया था। और मूर्ति पूजा के साथ ही साथ मूर्तियों के लिये बलिदान की भी अधिकता होती जाती थी। हिन्दू धर्म में विष्णु के बौद्धावतार होने का उल्लेख पहले से ही किया गया था।

६२३ वर्ष ईसा के पूर्व स्वार्थ सिद्ध या सिद्धार्थ का जन्म हुआ, वह महाराज सुद्धोधन के पुत्र थे। महाराज सुद्धोधन सूर्य वंश के क्षत्रिय राजा थे। वह उस समय मगध (आधुनिक बिहार) में राज्य करते थे।

स्वार्थ सिद्ध का पालन पोषण बड़े यत्न के साथ हुआ। १६ वर्ष की अवस्था में उनका व्याह राजकुमारी यशोधरा के साथ हुआ। व्याह के पश्चात् राजकुमार ने

कई वर्ष तक गृहस्थ जीवन सुख पूर्वक व्यतीत किये। अंत में स्वार्थ सिद्ध ने अपना धार्मिक जीवन बनाना ही अति उपयोगी समझा।

२८ वर्ष की अवस्था में स्वार्थ सिद्ध के जीवन में परिवर्तन हुआ तब उन्होंने अपना नाम बदल कर सावन्यसिंह रक्खा और अपना जीवन योग साधन में व्यतीत करने लगे। ३५ वर्ष तक उन्होंने हिन्दू धर्म के भिन्न भिन्न मतों का अध्ययन किया और शान्ति की अथवा निर्वाण की खोज में लगे रहे। गया में बौद्ध वृक्ष के नीचे उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ। उसके पश्चात् वह हिन्दू धर्म के केन्द्र बनारस या काशी नगर की ओर सब से पहले अपना धर्म प्रचार के लिये गये। अपने आत्म बल, उच्च वंश, ज्ञान, विद्या तथा योग के कारण वह अपने कार्य में सफल हुये और भिन्न भिन्न मतों का सामना करते हुये उन्होंने अपना नया मत स्थापित किया जो बौद्धधर्म के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

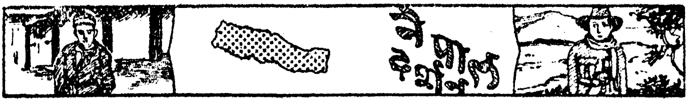
बौद्ध भगवान ने जाति का विरोध किया और कहा कि सभी लोगों में एक ही आत्मा वास करती है। मनुष्य अपने कर्मों के अनुसार ही संसार में जन्म लेता

और मरता है। जब तक उसे निर्वाण नहीं मिलता उसकी आत्मा का आवागमन लगा रहता है। नीच कर्म होने से मनुष्य का जन्म नीच प्राणियों के यहां होता है और वह पशु-पक्षी या कीड़ा मकोड़ा हो जाता है। प्रत्येक जीव में एक ही आत्मा वर्तमान होने के कारण ही बौद्ध भगवान ने शिक्षा दी कि किसी भी प्राणी की हिंसा न की जावे।

बौद्ध भगवान को अपने धर्म के प्रचार में बड़ी सहायता मिली और शीघ्र ही बहुत अधिक लोग बौद्ध मत के मानने वाले हो गये।

उत्तरी तथा पश्चिमी भारत के अधिकांश भाग का भ्रमण करने के पश्चात् बौद्ध भगवान नैपाल की तीर्थ यात्रा करने के लिये गये। उनके साथ एक हज़ार तीन सौ पचास भिक्षु भी गये। उनके साथ महाराज काशी और दूसरे प्रकार की प्रजा भी थी।

नैपाल में जाकर बौद्ध भगवान ने देखा कि उनके मत का प्रचार पहले से ही मंजुर्सी नामक सन्यासी ने कर रक्खा है। मंजुर्सी तिब्बत का रहने वाला था। मंजुर्सी ने ही स्वायम्भू नाथ का प्रसिद्ध मंदिर बनवाया था। बौद्ध भगवान ने अपनी शिक्षा



लोगों को दी और नागवास की बड़ी झील को नैपाल की घाटी बनाने की कहानी बतलाई।

जब वह नैपाल से भारत लौटे तो उनके साथ के अधिकांश लोग नैपाल में ही रह गये और वहां के आदि निवासी बन गये। इस प्रकार नैपाल में जाति-पांत की प्रणाली चली।

साक्य, गौतम, साक्य मुनि और महामुनि के नाम से भी प्रसिद्ध हैं। ब्राह्मणों के मत और बौद्ध मत में सबसे बड़ा अंतर यह है कि बौद्ध लोग वेद और पुराण को नहीं मानते हैं। यह हिन्दुओं के मुख्य ग्रंथ हैं और दैवी संपदा माने जाते हैं।

संक्षिप्त इतिहास

नैपाल शब्द 'ने' से बना है। कहा जाता है कि ने मुनि बाघमती और केसवती नदियों के संगम पर तप करते थे। पाल शब्द 'पाला' का बिगड़ा हुआ रूप है। इस प्रकार नैपाल या नेपाल का अर्थ ने का पाला हुआ स्थान या देश हुआ।

प्राचीन समय में नैपाल की घाटी "नाग हृद" कहलाती थी जिसका अर्थ साँप का तालाब होता है। प्राचीन हिन्दू लेखों से पता चलता है कि नैपाल की तराई किसी समय में एक बड़ी झील थी। यह बात भौगोलिक सिद्धान्त से भी सम्भव है। बौद्धमत के अनुसार मंजुश्री ने और हिन्दूमत के अनुसार विष्णु भगवान ने अपनी तलवार से पर्वत को काट कर दर्रा या मार्ग बनाया जिससे यह बड़ी झील पट गई और घाटी बन गई। तलवार से काट कर बनाये गये दर्रे या मार्ग का नाम कोटवार, कोटवाल या कोटपाल है।

प्राचीन देशों की भांति नैपाल राज्य का प्राचीन इतिहास भी किस्से कहानियों तथा प्राचीन धार्मिक गाथाओं में पाया जाता है।

मंजुस्री (मंचूरिया निवासी) नैपाल में चीन

से आया और लौटने के पहिले उसने नैपाल में धरमकार नामक व्यक्ति को राजा बनाया। धरमकार के कोई संतान न थी अतः उसने धरमपाल नामक व्यक्ति को राज्य सौंप दिया। धरमपाल के बाद उसी वंश के सुधन्व नामक राजा का नाम मिलता है। यह धरमपाल के वंश का ही था। सुधन्व राजा जनकपुर महाराज जनक की सुपुत्री सीता के स्वयम्बर में गये थे परन्तु वहां वह मार डाले गये और उनके स्थान पर उनका भाई कुशध्वज राजा बनाया गया। कुशध्वज के संतान न थी इसलिये राजवंश का अंत हो गया। उसके पश्चात् सोभारती से कनक मुनि (बौद्ध) और बनारस से कश्यप मुनि (बौद्ध) नैपाल गये। कश्यप मुनि ने बंगाल के राजा प्रचंड देव को नैपाल राज्य करने के लिये भेजा। उसके पश्चात् कई राजा हुये।

नैपाली पुस्तक वंशावली से पता चलता है कि प्रचंडदेव के बहुत समय पश्चात् किराँती जाति नैपाल में आई और पूर्वी प्रदेश में बसी। उसके पश्चात् सुपर्भ (अब थानकोट) नगर की ओर बढ़ीं और नैपाल को जीत कर बहुत समय तक राज्य किया। किराँतो

जाति को मद्रास प्रान्त के कांजीवरहम के राजा धर्मदत्त ने मार भगाया और नैपाल में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र चार जातियों को बसाया। पशुपति महादेव का मंदिर महाराज धर्मदत्त का ही बनवाया हुआ है। धर्मदत्त के पश्चात् विक्रमादित्य नैपाल के राजा हुये उनकी मृत्यु के बाद उनके पुत्र विक्रम केसरी नैपाल की गद्दी पर बैठे। विक्रम केसरी के बाद उनके पुत्र मानदेव सिंहासन पर बैठे। महाराज मानदेव ने ही बौद्धनाथ का मंदिर बनवाया था जिसे भूटिया जाति के लोग बड़ा पवित्र मानते हैं।

मानदेव के पश्चात् ने मुनि ने गोपाल वंश के एक व्यक्ति को राजगद्दी पर बैठाया। ने मुनि के नाम पर ही नैपाल नाम पड़ा है। यह नैपाल के सबसे बड़े पूज्य ऋषि माने जाते हैं। इस प्रकार गोपाल वंश के राजों का राज्य आरम्भ हुआ।

गोपाल वंश—इस वंश में आठ राजा हुये। सबसे पहले राजा का नाम भूतमन और अंतिम का यक्षगुप्त था। यक्षगुप्त के कोई संतान न थी। इसलिये भारतवर्ष के मैदान से बर सिंह नामक अहिर आया और सिंहा-

सन पर बैठा। अहिर बंश में तीन राजा हुये। इस वंश का अंतिम राजा भूरनसिंह था। भूरन सिंह के समय में पूर्व की ओर से किराँतो जाति ने आक्रमण किया और विजय प्राप्त करके किराँती वंश का राज्य स्थापित किया।

किरांती वंश—किराँती वंश के सबसे पहले राजा यलम्बर थे। इस वंश के सप्तम राजा जितेदास्ती थे। उन्हीं के समय में बुद्ध भगवान ने नैपाल राज्य का भ्रमण किया था। इस वंश के चौदहवें राजा स्तुंको के समय में महाराज अशोक वर्धन नैपाल गये थे। उनकी पुत्री चरुमती का विवाह नैपाल के देवपाल नामक क्षत्रिय से हुआ था। देवपाल ने देवपाटन नामक नगर स्थापित किया था। पतुका किराँती वंश का अट्ठाईसवां राजा था। उसके समय में सोमावाँसी राजपूतों ने आक्रमण किया और संखमूलतीर्थ का क़िला बनवाया। पतुका के पश्चात् किराँनी वंश के अंतिम राजा गास्ती को निमिख नामक सोमवांसी वंश के राजा ने हराया और सोमवांसी वंश की नींव डाली। इस वंश में पांच राजा हुए। अंतिम और सबसे बड़ा राजा भास्कर वर्मन था। उसने समस्त भारतवर्ष

को जीत कर समुद्र तट तक अपना राज्य स्थापित किया। देवपाटन नगर को उसी ने उन्नति दी। भास्कर वर्मन के कोई संतान न थी इसलिये उसने सूर्य वंश के भूमिवर्मन नामक राजपूत को जो गौतम गोत्र के थे राजसिंहासन दिया।

सूर्यवंश—इस वंश में ३१ राजा हुये। रुद्रदेव इस वंश के सातवें राजा थे। उन्होंने ६५३ से ६५६ ई० तक राज्य किया। उनके समय में शंकराचार्य नैपाल गये और बौद्ध धर्म का विरोध किया। रुद्रदेव ने बौद्ध धर्म वालों पर बड़ा अत्याचार किया। रुद्रदेव के शासन काल तक नेपाल में किसी अन्न की उपज नहीं की गई।

शिवदेव वर्मन इस वंश का सत्ताईसवां राजा था उसने देवपाटन को अपनी राजधानी बनाया। विश्वदेव वर्मन सूर्य वंश के अंतिम राजा थे उनके कोई पुत्र न था। इसलिये उसने अपनी पुत्री का विवाह अम्सू नामक ठाकुर (राजपूत) से कर दिया। इसी समय महाराज हर्षवर्धन नैपाल गये और समस्त राज्य का ऋण चुकाने के पश्चात् अपना सम्वत जारी किया। सन् ६३४ ई० में अम्सू वर्मन नैपाल की गद्दी पर बैठे और

ठाकुर वंश की नींव डाली। शिला लेखों के अनुसार अम्सू वर्मन ने ६३५ ई० से ६५० ई० तक राज्य किया।

इस वंश का पांचवां राजा वीरदेव के समय में एक घसियारा बड़ा कुरूप था। वह एक कुंड में स्नान करने के कारण बड़ा ही सुन्दर हो गया इसलिये वीर देव ने उसी कुंड के समीप ललितपुर नगर बसाया। षष्टम राजा चन्द्रकेतु देव के समय में नेपाल पर कई विदेशी आक्रमण हुये। आठवें राजा नरदेव ने ललितपुर को अपनी राजधानी बनाया।

इस वंश का पन्द्रहवां राजा गुण कामदेव था। उसी ने कांतीपुर (काठमांडू) नगर को बसाया। यह नगर बाघमती और विष्णुमती नदियों के संगम पर स्थित है। इसी नगर को गुणकामदेव ने अपनी राजधानी बनाया। परन्तु फिर भी वह पाटन से शासन करता रहा। ठाकुर वंश के अंतिम राजा जयकामदेव के कोई संतान न थी। इसलिये नवकोट पर्वत के ठाकुरों ने अपने वंश से भास्करदेव को राजा चुना। नवकोट ठाकुर राजघराने में पांच राजा हुये।

वमदेव ने द्वितीय ठाकुर राजघराने की नींव डाली जिसमें १२ राजा हुये। इस वंश के तीसरे राजा सदाशिव देव ने काठमांडू के पश्चिम पहाड़ी पर कीर्तीपुर नगर बसाया और तांबे का मुद्रा चलाया जिसपर सिंह का चित्र बना था। ग्यारहवें राजा जयदेवमाल ने नेवारी सम्बत् का आरम्भ किया। यह सम्बतसर १२५७ ई० से आरम्भ होता है। जयदेवमल ललितपटन में और आनन्द मल भक्तपुर या भटगांव में शासन करता था। आनन्द मल इस राजघराने का अंतिम राजा था। उसने १२६८ से १३०२ ई० तक राज्य किया। फिर करनाटकी और मगर वंश का राज्य रहा। उसके बाद नवाकोट के वैश्य आये और नैपाल पर अधिकार जमाया। इस काल में नैपाल कई अलग अलग राज्यों में विभाजित होगया था।

१३२४ ई० में सिमरौन (तिरहुत या मिथला) के राजा हरी कृष्ण देव ने नैपाल विजय किया और अयोध्या वंश की नींव डाली। इसी वंश के तीसरे राजा शक्तिसिंह देव ने चीन के महाराजाधिराज को एक पत्र लिखा था जिसमें मोहर की एक छाप लगी

थी। छाप में शक्ति सिंहराम छपा था। इस वंश का अंतिम राजा श्याम सिंहदेव था। उसकी पुत्री का विवाह मल्ल वंश के एक व्यक्ति से हुआ था जो नान्यदेव के आक्रमण के समय तिरहुत भाग गया। इसलिये श्यामसिंह देव की मृत्यु के पश्चात् ठाकुरों के तीसरे वंश का राज्य आरम्भ हुआ। ठाकुर वंश में जयभद्रमल, नागमल, जय जगत मल, नागेन्द्रमल, उग्रमल, अशोक मल, जयस्थितमल, यक्षमल, रायमल, सुवर्णमल, प्राणमल, विश्वमल, त्रिलोकमल, जगत ज्वालामल नरेन्द्रमल, जगत प्रकाशमल, जीतमित्रमल और भूपतिंद्रमल राजाहुये।

१७६६ ई० में रणजीतमल को हराकर पृथ्वी नारायण गोरखा ने अपना राज्य स्थापित किया। इस प्रकार भटगांव घराने का अंत हुआ।

काठमांडू घराना—रतन मल ने काठमांडू घराने की नींव डाली। इसके समय में नैपाल राज्य में यवन (मुसलमान) सर्व प्रथम व्यापारी के रूप में गये। इस वंश के सातवें राजा शिवसिंह मल के समय में नैपाल घाटी में भटगांव, काठमांडू और पाटन तीन

राज्य थे। काठमांडू घराने में १३ राजा और पाटन घराने में १२ राजा हुये।

नैपाल में कुछ समय तक मुसलिम राज्य रहा गोरखा जाति को मुसलमानों ने नैपाल से मार भगाया था और वह कमायूं में आ बसे थे। कमायूं से वह धीरे धीरे पूर्व की ओर बढ़े और लाम्जुंग, गोरखा, नोआकोट और नैपाल घाटी में आबसे और पृथ्वी नारायण की क्षत्रछाया में विजय करने लगे।

१७६८ और १७६६ में पृथ्वी नारायण नामक गोरखा सरदार ने भटगांव के राजा रणजीत मल, काठमांडू के राजा जयप्रकाशमल और पाटन के राजा विश्वजीतमल को हराकर अपना गोरखा राज्य नैपाल में स्थापित किया।

गोरखा शासक—१७६६ ई० में कैप्टन किन्लोच एक अंग्रेज़ सेना लेकर नैपाल में प्रवेश करने के लिये गया था परन्तु सेना की बीमारी तथा कठिन मार्ग के कारण लौटना पड़ा। समस्त नैपाल की विजय करने के तीन वर्ष बाद १७७१ ई० में पृथ्वीनारायण सिंह की मृत्यु हो गई। पृथ्वी नारायण सिंह के दो पुत्र सिंह

प्रताप और बहादुरशाह थे। सिंह प्रताप गद्दी पर बैठे और अपने भाई बहादुर शाह को क़ैद कर लिया। राज्य पुरोहित के कहने पर वह छोड़े गये परन्तु नैपाल राज्य छोड़ कर वह चले गये। १७७५ ई० में सिंह प्रताप की मृत्यु होगई। उनके केवल एक पुत्र रण बहादुर शाह थे। भाई की मृत्यु के पश्चात् बहादुरशाह नैपाल लौटे और अपने भतीजे छोटे बच्चे को गद्दी पर बैठा कर राज काज का काम आप ही देखने लग गये। रणबहादुर शाह की माता राजेन्द्र लक्ष्मी ने राज-काज की लगाम अपने हाथ में लेनी चाही। बहादुर शाह ने रानी को पकड़ कर छिपा दिया परन्तु दरबार के सरदारों ने विरोध किया और बहादुर शाह को राज्य छोड़कर भाग जाना पड़ा। रानी के मर जाने पर वह फिर वापस आया और राज-काज की बागडोर फिर अपने हाथ में ले ली। उनके समय में नैपाल राज्य मेची नदी से गढ़वाल तक और तिब्बत सीमा से भारतवर्ष की सीमा तक फैल गया।

१७८७ ई० के लगभग सरूप सिंह नामक गोरखा जनरल ने समस्त किराँती देश की विजय की और

अपने राज्य को सुम्बेश्वर तक बढ़ाया। १७८८-८६ ई० में गोरखा सेना ने तिब्बत और शिकम राज्यों पर आक्रमण किया। चीनी सेना का सेनापति जनरल धुरीन था। धुरीन ने गोरखा सेना को परास्त किया और नयाकोट स्थान पर गोरखा राजा को संधि करने पर मजबूर किया।

अंग्रेज़ों के साथ संधि—मार्च १७६२ ई० में लार्ड कार्नवालिस ने गोरखा राजा के साथ व्यापारिक संधि की और कर्नल किर्क पाट्रिक नैपाल भेजा गया परन्तु १७८३ ई० में वह लौट आया क्योंकि गोरखा लोग उसके साथ पूर्ण रूप से मिलकर काम करने को तयार न थे। १७६२ ई० में जगजीत की देखभाल में कमायूं ज़िले पर आक्रमण किया और अपने राज्य में मिला लिया। १८१६ ई० तक गढ़वाल और कमायूं नैपाल राजा के भाग बने रहे। उसके पश्चात् सिगौली की संधि के अनुसार यह ज़िले अंग्रेज़ों को वापस दे दिये गये।

१७६५ ई० में रण बहादुर शाह ने अपने चचा के हाथ से शासन की बागडोर छीन ली। १८०० ई० में रणबहादुर देश से निकाल दिया गया और गिर्बान युद्ध विक्रमशाह राजा बनाया गया। उसने १८१६ ई० तक



राज्य किया। राजा बालक था इसलिये महारानी महिला राज्य का प्रबंध करती रहीं।

१८०१ ई० में नैपाल सरकार और ब्रिटिश सरकार के बीच एक संधि हुई और कैप्टन डब्ल्यू० डी० नाक्स नैपाल दरबार में ब्रिटिश राजदूत बना कर भेजा गया। १८०३ ई० में नाक्स नैपाल दरबार से वापस चला आया क्योंकि वह ब्रिटिश शर्तों को पूर्ण करने में बहाना कर रहा था। १८०४ ई० में रण बहादुरशाह बनारस से नैपाल वापस चला गया और अपने शत्रुओं की हत्या करके शासन करने का प्रयत्न किया परन्तु मार डाला गया।

राजा गिर्बान युद्ध ने भीमसेन चाचा को अपना प्रधान मंत्री बनाया।

अंग्रेज़ों के साथ युद्ध—पहली नवम्बर १८१४ ई० को लार्ड हेस्टिंग्ज़ ने नैपाल के विरुद्ध युद्ध घोषणा किया क्योंकि गोरखा सिपाहियों ने कई स्थानों पर उपद्रव किया था और बोटवाल ज़िले की समस्त अंग्रेज पुलीस को मार डाला था। यमुना तथा सतलज नदी की ओर से ब्रिटिश सेना बढ़ी परन्तु गोरखा सेना ने प्रत्येक बार

ब्रिटिश सेना को मार भगाया। ब्रिटिश सेना का प्रधान सेनापति जनरल गिलेस्पी बनाया गया था।

सन् १८१५ ई० में ब्रिटिश सेना सर डैविड आक्टर-लोनी के सेनापतित्व में भेजी गई। आक्टरलोनी ने गोरखा सेना को मार भगाया और खदेड़ता हुआ चला गया। अंत में गोरखा सरदार अमरसिंह संधि करने पर बाध्य हुआ और काली नदी के पश्चिम का प्रदेश गोरखा सेना ने छोड़ दिया। कमायूं में भी गोरखा सेना तथा ब्रिटिश सेना के मध्य संधि हुई परन्तु नैपाल के राजा ने हस्ताक्षर नहीं किया था इस लिये युद्ध फिर आरम्भ करने की सलाह हुई। सारन में ब्रिटिश सेना एकत्रित की जाने लगी। धीरे धीरे कुल ३३ हज़ार सेना एक-त्रित हो गई।

जनवरी १८१६ ई० में ब्रिटिश सेना ने अपना आक्रमण आरम्भ किया और बेतिया के मार्ग से काठमांडू नगर की ओर बढ़ी। तीन दिन के भीतर ही ब्रिटिश सेनाएं काठमांडू तक पहुँच गईं। गोरखा सेना ने बहा-दुरी के साथ सामना किया परन्तु अंत में संधि करने पर विवश हुई। ४ मार्च १८१६ ई० को सुगौली स्थान

पर संधि हुई और महाराज नैपाल ने संधि पत्र पर अपने हस्ताक्षर कर दिये। नैपाल सरकार ने झगड़े वाली भूमि छोड़ दी और काली नदी के पश्चिम जो प्रदेश गोरखा सेना ने जीता था वह भी लौटा दिये गये। कमायूँ और देहरादून छोड़कर अंग्रेज़ों ने भी अपने विजय किये हुये स्थान छोड़ दिये। महाराज नैपाल ने ब्रिटिश क्षत्रछाया में रहना स्वीकार कर लिया।

इस युद्ध के समय नैपाल सरकार ने बड़े लामा के द्वारा चीन के महाराज के पास पेकिन सहायता के लिये एक पत्र भेजा था। चीन के महाराज ने उत्तर दिया था कि चूंकि वह युद्ध गोरखा जाति का ही आरम्भ किया हुआ है इसलिये वह किसी प्रकार की नतो सहायता दे सकता है और न अंग्रेज़ों को रोक सकता है।

संधि करने के पश्चात् चीन के महाराजा नैपाल महाराज पर बहुत अप्रसन्न हुये और लासा से १३ हज़ार चीनी सेना नेपाल राज्य पर हमला कर दिया। नैपाल सरकार ने ब्रिटिश सरकार से मध्यस्थ बनने के लिये कहा परन्तु इसी बीच कुछ लोग चीनी सेना

के पास नैपाल राज्य की ओर ये पहुंच गये थे जिन्होंने दोनों राजाओं के मध्य पुनः पूर्वत सम्बंध स्थापित करा दिये।

१८१६ ई० में अमर सिंह थापा को मृत्यु हो गई। अमर सिंह थापा एक बड़ा शूरवीर था वह भारतीय नरेशों को अंग्रेज़ों के विरुद्ध लड़ने के लिये उस्काता था और कहता था कि अँग्रेज़ समस्त भारत की स्व-तंत्रता के एक मात्र शत्रु हैं। नवम्बर १८१६ ई० में महाराज रण बहादुर शाह की मृत्यु होगई और तीन वर्षीय राना सुरेन्द्र विक्रम सिंह राजगद्दी पर बैठाये गये और जनरल भीमसेन थापा रीजेंट बनाये गये।

१८३९ ई० में भीमसेन के शत्रुओं को उसे शक्ति से हटाने में सफलता हुई और वह कारागार में डाल दिया गया जहाँ मर गया अथवा मार डाला गया। उसके पश्चात् काली पांड्री शक्ति में आये जिनसे ब्रिटिश सरकार से झगड़े हुये। १८४३ ई० में मतबार सिंह नैपाल लौट कर गये। यह भीमसेन के भतीजे थे। काली पांड्री लोग पकड़ लिये गये और १८४३ ई० में फांसी पर लटका दिये गये। इसी समय मतबार सिंह

का भतीजा जंग बहादुर सिंह नैपाल राज की किसी रानी की सहायता से सेना में उन्नति कर गया। १८४५ ई० में उसने अपने चचा को मार डाला और रानी की सहायता से नैपाल सरकार में एक बड़े पद पर नियुक्त हो गया और १५ सितम्बर १८४६ ई० को अपने शत्रुओं को कोट स्थान पर मरवा डाला। यह घटना कोट हत्याकांड के नाम से प्रसिद्ध है। उस दिन से मृत्यु होने तक जंग बहादुर नैपाल का वास्तविक शासक बना रहा। नैपाल राज्य के सभी सरकारी पदों पर जंग के सम्बंधी तथा मित्र नियुक्त कर दिये गये। १८५० ई० में जंगबहादुर इंगलैण्ड गया और अपने को अंग्रेज़ों का मित्र सिद्ध किया। १८५१ ई० में वह नैपाल लौटे और अपने राज्य के शासन के सुधार में लग गये। उन्होंने अपने को अपने देश का सब से बड़ा सुधारक सिद्ध कर दिया। १८५४ ई० में नैपाल सरकार ने तिब्बत के विरुद्ध युद्ध आरम्भ किया। मार्च १८५६ ई० को तिब्बत और नैपाल राज्य में सन्धि होगई। सन्धि नैपाल राज्य के अनुकूल हुई।

जून १८५७ ई० में भारतीय गदर का समाचार

नैपाल पहुँचा जंगबहादुर अंग्रेज़ों के मित्र बने रहे यद्यपि उनका बहुत विरोध किया गया। २६ जून को ब्रिटिश सरकार की सहायता के लिये ४००० सेना भेजी गई जिसकी सहायता से अंग्रेज़ों का पुनः भारत में रहने का अवसर प्राप्त हुआ। १० दिसम्बर को ८ हज़ार सेना ५०० तोप चलाने वाले सैनिक और तोपों के साथ जंग बहादुर स्वयम् ब्रिटिश सरकार की सहायता को भारत आये। बहुत से भारतीय विद्रोही नैपाल की तराई में भाग गये थे वह भी धीरे धीरे मार भगाये गये। नैपाल सरकार की सहायता के बदले ब्रिटिश सरकार ने उसे भूमि प्रदान की जिसमें साल और शीशम के बन हैं जो बड़े उपयोगी हैं और उससे नैपाल सरकार को कई लाख की आय होती है। नैपाल राज्य के साथ ब्रिटिश सरकार की संधि है फिर भी राज्य में प्रवेश करने के लिये कई प्रकार की रुकावटें लगी हैं। व्यापार में भी रुकावटें हैं। १८७७ ई० में जंग बहादुर सिंह की मृत्यु हो गई।

जंग बहादुर के पश्चात् उनके भाई सर रण द्वीप सिंह बहादुर जी० सी० एस० आई० १८७७ ई० में

प्रधान मंत्री बनाये गये। उनके मारने के लिये षड्यंत्र किया गया जिसका पता लग गया और लोग पकड़ कर फांसी पर लटका दिये गये। १८८५ ई० में उनकी हत्या कर दी गई। उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके भतीजे सर शमशेर जंग जी० सी० एस० आई० प्रधान मंत्री बनाये गये। १९०१ ई० में उनकी मृत्यु हो गई और उनके भाई देव शमशेर जङ्ग प्रधान मंत्री हुये। उसी वर्ष जून मास में राज्य महल में क्रांति हुई जिसके फलस्वरूप चन्द्र शम्शेर जङ्ग प्रधान मंत्री हुये और देव शम्शेर भारतवर्ष भाग आये। चन्द्र शम्शेर ने नैपाल का शासन बड़ी चतुरता तथा बुद्धिमता के साथ किया। १९०४ ई० में जब तिब्बत से ब्रिटिश सरकार का युद्ध हुआ तो उन्होंने सहायता की। इस लिये भारत सरकार के साथ उनका सम्बन्ध बहुत घनिष्ट हो गया। १९०६ ई० में उन्हें जी० सी० एस० आई० को पदवी दी गई। १९०८ ई० में उन्होंने सरकारी मेहमान के रूप में इंगलैण्ड का भ्रमण किया और जी० सी० बी० की उपाधि प्राप्त की। वह ब्रिटिश सेना के मेजर जनरल और चौथी गोरखा राइफल सेना के कर्नल बनाये गये।

देश दर्शन

गत महायुद्ध के समय सर चन्द्र शम्शेर जङ्ग ने मित्रराष्ट्रों को अपने देश की समस्त शक्ति के साथ सहायता दी। १६१५-१८ ई० तक नैपाली सेना के १० हजार सैनिक भारतवर्ष और भारतीय सीमा पर सेवा करते रहे। भारतीय सेना की २० गोरखा बैटेलियन सेना बढ़ाकर ४० कर दी गई। महाराज की निजी सहायता के अतिरिक्त नैपाल सरकार ने १६१४ ई० के युद्ध में १० लाख पौंड से ब्रिटिश सरकार की सहायता की थी। इसके अतिरिक्त चाय, कम्बल, लकड़ी तथा और दूसरे सामान भी दिये गये। अफगान युद्ध के समय २ हज़ार नैपाली सेना भारतीय सेना की सहायता के लिये भेजी गई। चन्द्र शम्शेर जङ्ग ने ही नैपाल में गुलामी प्रथा का अंत किया है। आधुनिक महासमर में भी नैपाल सरकार पूर्णशक्ति के साथ ब्रिटिश सरकार की सहायक हो रही है।

२१ दिसम्बर १६२३ ई० को १६१५ ई० की सुगौली संधि के स्थान पर दूसरी मैत्री संधि-नैपाल तथा ब्रिटिश सरकार के मध्य हुई है। इस संधि के अनुसार ब्रिटिश सरकार ने नैपाल सरकार की पूर्ण स्वाधीनता की स्वीकृत दे दी है।



शेर के शिकार की कहानी

नैपाल में शेर का शिकार करने के लिये शिकारी पहले शेर का पता लगाते हैं। पता लग जाने पर एक पशु (बकरा आदि मार कर रख देते हैं। जब शेर शिकार की ओर जाता है तो चारों ओर से हाथियों का घेरा डाल देते हैं। धीरे धीरे हाथी शेर की ओर चलते जाते हैं जब शेर अपने ऊपर आने वाले संकट से भली भांति परिचित हो जाता है तो वह हाथियों पर हमला करता है। वहां घास तथा झाड़ियां लम्बी होती हैं। सभी हाथियों पर शिकारो बन्दूक भो नहीं लिये रहते इस लिये शेर को बचकर निकल भो जाने का भी अच्छा अवसर रहता है।

नैपाल की तराई शेर के शिकार के लिये संसार भर में प्रसिद्ध है। एक बार एक अंग्रेज़ महाशय नैपाल की तराई में शेर का शिकार खेलने गये। शिकार के लिये स्थान ठोक किया। एक बकरा मार कर वहां डाल दिया। चारों ओर से ६० हाथियों का घेरा भी डाल दिया गया। अंग्रेज़ साहब एक बड़े हाथो पर बैठे थे।

वह आगे बढ़ते हुये हाथियों की सूंड़ें तथा पूंछें देख रहे थे। शेर मरे बकरे के समीप इधर उधर घूम रहा था। साहब ने देखा कि घेरे के एक स्थान पर लगभग १०० गज़ में किसी हाथी के हौदे पर बन्दूक न थी। साहब सोच रहे थे कि शेर उसी ओर से निकलने की कोशिश करेगा।

वह इसी विचार में मग्न थे कि यकायक उनके समीप ही झाड़ियों से सनसनाहट की आवाज़ पैदा हुई। साहब ने उस ओर देखा। वह तय भी न कर पाये थे कि आखिर झाड़ी में सनसनाहट क्यों हुई कि झाड़ियों के मध्य से काली तथा पीली वस्तु तेज़ी के साथ निकलती दिखाई पड़ी। शेर साहब की ओर तेज़ी से बढ़ रहा था।

गुस्सावर शेर का हमले का दृश्य भी बड़ा ही अनोखा होता है। शेर बिजली की भांति तड़पता, गरजता हाथियों की ओर झपटा। उस समय उसकी आंखों से चिनगारियां निकल रही थीं और भयानक बड़े बड़े दाँत चमक रहे थे तड़प और गरज तो बड़ी भयानक तथा असहनीय थी।

शेर की तड़प और झपट के सामने हाथियों का

साहस जाता रहा। वह सभी एक साथ पीछे की ओर लौट पड़े। साहब घबड़ा उठे और उन्हें प्रतीत हुआ कि शेर उन्हीं पर आ झपटा।

इतने में साहब के एक साथी ने गोली मारी। एक के बाद दूसरी गोली छूटी। दोनों गोलियां शेर के शरीर में प्रवेश कर गईं। चोट खाते ही शेर कराहता पीछे हटा और वृक्षों के मध्य एक गली में धड़ाम से गिरा और मर गया।

शेर के गिर जाने पर भी महावत गोलियां चलाते रहे। शिकारी बड़े खुश हुये और चारों ओर से हर्ष-ध्वनि गूँज उठी। कुछ लोग झाड़ियों से होकर शेर को देखने लगे कि कहीं वह जीवित तो नहीं है।

लोग हाथी से उतरे और जाकर चारों ओर से उसे घेर लिया। कुछ लोगों ने साल की ५ या ६ पत्तियां तोड़कर शेर के चारों ओर बिछा दीं और गरम खून उस पर फैला दिया। खून काली देवी का भाग था। नेपाली काली के बड़े पुजारी होते हैं। कुछ जङ्गली लोगों ने शेर का मांस निकाल लिया। वह शेर का मांस अपने बच्चों को खिलाते हैं।

जङ्गली लोगों का विश्वास है कि शेर का मांस खिलाने से बच्चे शेर की भांति बहादुर और वीर हो जाते हैं।

पोशाक (पहनावा)

नैपाल के गरीब गोरखे लोग भी हमारे देशवासियों की भांति लंगोट पहनते हैं। लंगोट कमर में पहनी जाती है। शरीर पर वे पतली वेस्टकोट पहनते हैं जिसमें नीचे से ऊपर तक बटने लगी रहती हैं। कमर में गोरखे लोग अंगोछा या पगड़ी लपेटते हैं। इसी में वह अपनी कुकड़ी भी खोंसे रखते हैं। गोरखों की टोपी गोली और काली होती है। यह टोपी एक ओर अधिक और दूसरी ओर कम ऊँची होती है। लंगोट तथा वेस्ट-कोट के ऊपर वह पतला कम्बल या खादी की चद्दर पहनते हैं।

चद्दर पहनने का ढंग यह है कि चद्दर को पीठ की ओर लेजाकर चौड़ाई के दो सिरों को पकड़ते हैं एक सिरे को दाहिने कंधे से और दूसरे को बाएं हाथ की

बग़ल से सामने सीने पर लाकर बांध देते हैं। उसके बाद दाहिनी ओर का दूसरा किनारा सामने से बाएँ कंधे पर लाते हैं और बाँई ओर का दूसरा किनारा बाईं बग़ल से ले जाकर पीठ पर बाँध देते हैं। हमारे देश में भी बहुत से लोग जाड़े के दिनों में ऊनी चादर इसी प्रकार ओढ़ते हैं। इस प्रकार चादर प्रयोग करने से हाथ और पैर काम करने तथा चलने के लिये खाली रहते हैं।

पैर में नैपाली गोरखे जूते पहिनते हैं। गोरखा जूता अच्छा और मज़बूत होता है। इस पर साधारण भारतीय चमड़े के जूते की भांति पानी का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। यह कीचड़ में पैर से निकल कर बाहर नहीं होता है

पिंथान और पाल्या के निवासी "चटके पटोक" (बड़ी चादर) अपने शरीर पर लपेटते हैं। गुरुंग लोग गले में पीला धागा बांधते हैं। लम्पुजुंग के गुरुंग काला धागा गले में बांधते हैं और लंगोटी में एक गांठ लगाते हैं।

जब धूप अधिक होती है तो गोरखा अपने कमर

के फंदे को खोलकर सिर पर पगड़ी बांध लेते हैं। दोपहर के पश्चात् जब ठंडक होने लगती है तो वह पगड़ी उतार कर फिर कमर में बांध लेते हैं।

काठमांडू के निवासी और नैपाली उच्च श्रेणी के लोग चौबंदी पहनते हैं। इसे भारतवर्ष में मिर्ज़ई कहते हैं और देहात में पुराने विचार के लोग पहनते हैं। चौबंदी में आठ रंगीन बंद होते हैं। चार बंद भीतर की ओर और चार बाहर की ओर होते हैं। बाँधने पर दो बंद बांईं ओर सीने के ऊपर और दो बांईं ओर और कमर की सीध में रहते हैं। चौबंदी बड़ी चुस्त पहनी जाती है और बदन में कसी रहती है। इन लोगों की कमर की पगड़ी सफेद और रंगीन होती है और कुकड़ी भी अधिक सुन्दर तथा अच्छी होती है।

उच्च श्रेणी के लोग कोट के नीचे कमीज़ पहनते हैं जो तीन या चार इंच बाहर निकली रहती है। वे चौड़ी मोहरी का पायजामा भी पहनते हैं और कमीज़ के निचले भाग को पायजामा के अन्दर नहीं डालते हैं।

पायजामा और कोट पतले सफेद चमकीले कपड़े

के बनते हैं। यह दोहरे बनाये जाते हैं और दोनों परत के बीच रुई का ऊन भरकर सिला रहता है। और उसपर पास पास समानान्तर रूप से सिलाई रहती है।

नैपाल के गरीब निवासी भारतीय किसानों की अपेक्षा कहीं अधिक सुखी हैं। वह हँसमुख होते हैं। उनका जीवन सुखमय होता है। स्त्रियां भूरे छपे सूती कपड़े का बना लहंगा पहनती हैं। यह कपड़ा नैपाल में भारतवर्ष और जापान से आता है। लहंगे पर वह सफेद कपड़ा कमर में मर्दों की भांति बांधती हैं। बहुत सी स्त्रियां काली कमीज़ और लाल गुरियों की माला गले में पहनना पसंद करती हैं।

नैपाली लोग चाहे वह कुम्हार के चक्के पर काम कर रहे हों या कुवां से पानी भर कर ले आ रहे हों अथवा धान के खेतों में काम कर रहे हों वह सभी दशाओं में खुश तथा प्रसन्न दिखलाई पड़ते हैं। वह मरते, जीते, संकट काल, काम करते समय और शुभ कार्य के समय सभी दशा में हंसमुख और सुखी हो दिखाई पड़ते हैं।

नैपाली वर्ष, महीना और दिन

नैपाल राज्य में तीन प्रकार के सम्वतसर का प्रयोग होता है। विक्रमी सम्वतसर का आरम्भ ५७ वर्ष ईसा के पूर्व से माना जाता है। शाका सालिवाहन सम्वत्सर का आरम्भ सन् ७८ ईसवी से माना जाता है। नैपाली सम्वत्सर का आरम्भ काल ८८० ई० माना जाता है। एक चौथे प्रकार के सम्वतसर का भी प्रयोग होता है जिसे काली घाट सम्वत् सर कहते हैं। इस सम्वत् का आरम्भ ३१०१ वर्ष ईसा के पूर्व से माना जाता है।

नैपाली फौज तथा सरकारी दफ्तरों में नैपाली सम्वत्सर का प्रयोग होता है। इस सम्वत् का नया वर्ष पहली अक्तूबर को आरम्भ होता है।

नैपाल में श्री हर्ष सम्वत सर का भी प्रयोग हुआ था क्योंकि महाराज हर्ष वर्धन ने गुजरात से लेकर आसाम तक अपना राज्य स्थापित किया था। हर्ष समवत् सर सन् ६०६ ई० से आरम्भ होता है।

नैपाल में नया वर्ष माघ से आरम्भ होता है। माघ

मास १५ जनवरी को आरम्भ होता है और १५ फरवरी के लगभग समाप्त होता है। फागुन महीना लगभग १५ मार्च को खतम होता है। इस प्रकार चैत १५ अप्रैल, बैसाख १५ मई, ज्येष्ठ १५ जून, असाढ़ १५ जुलाई, सावन १५ अगस्त, भादों १५ सितम्बर, असोज (कुवार) १५ अक्तूबर, कार्तिक १५ नवम्बर, मंगसिर (एगहन) १५ दिसम्बर और पूस लगभग १५ जनवरी के समाप्त होता है।

महीनों की भांति दिनों के नाम भी वही हैं जो हमारे हिन्दी भाषा में हैं।

चाल-चलन

गोरखा जाति वीर, सहनशील, भक्त, स्वाधीन, साहसी, अपने ऊपर भरोसा रखने वाली तथा साफ साफ बातचीत करने वाली होती है। गोरखा लोग अपने देश नैपाल में विदेशियों से द्वेष भाव रखते हैं। और अपनी बात मनाने पर अधिक ज़ोर देते हैं।

नैपाली लोग वीर साहसी और उन्नतशील लोगों का आदर करते हैं। वह ऐसे लोगों का अनुकरण भी सहर्ष करते हैं।

नैपाली लोगों में "टोपीवार कामवार, लुङ्गीवार खानेवार" की कहावत बहुत प्रचलित है। गोरखा लोगों का विश्वास है कि टोपी लगाने वाले लोग काम करने वाले होते हैं परन्तु लुङ्गी पहनने वाले केवल खाना जानते हैं वह काम नहीं कर सकते हैं।

नैपाली लोग स्त्रियों से कुछ चिढ़ सी रखते हैं परन्तु वे बड़े घरेलू होते हैं और अपनी स्त्रियों तथा बाल बच्चों से बड़ा प्रेम रखते हैं।

नैपाली स्त्रियां हमारे देश की स्त्रियों की अपेक्षा कुछ अधिक स्वतंत्र होती हैं पर बातचीत कम करने वाली होती हैं। वह अपने पति का भेष, स्वभाव और घरेलू बातों का ध्यान रखते हुये अपने प्रेम को पति पर प्रगट करती हैं। साधारण गोरखा लोगों में कुछ गंदेपन की आदत अवश्य पाई जाती है। परन्तु वह बड़े सच्चे और काम करने वाले होते हैं।

गोरखा जाति में सबसे बड़ी खराबी जुवा खेलने की है। वह जुवे के दांव पर वह अपनी समस्त जायदाद लगा देते हैं और अपने को गुलाम तक बना देते हैं। वह बड़े गुस्सावर होते हैं और थोड़ी थोड़ी बात में उन्हें



गुस्सा आ जाता है परन्तु साधारण रूप से वह बड़े शान्त और कायदे तथा नियम के पालक होते हैं। उन्हें सेना में भी सज़ा बहुत मुश्किल से दी जाती है। फौज़ी परेड में गोरखा लोगों के ऊपर अफसर अधिक सख्ती नहीं कर सकता। वह बार बार काम में रुकावट डालने से और मीन-मेष निकालने से नाराज़ हो जाते हैं। यदि उनके साथ सुस्ती की जाती है तो वह चंचल हो जाते हैं और भड़ भड़ाने लगते हैं।

गोरखा जाति अपनी चलन के अनुसार लड़ाकू होते हैं। उनमें सच्चे सैनिक भाव प्राकृतिक रूप से ही बर्तमान हैं।

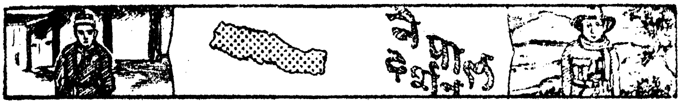
वह अपने स्वास्थ्य, गठीले मज़बूत बदन, दूरदर्शिता साफ सुनने और कसरती होने के कारण अच्छे सैनिक होते हैं। जंगली तथा पहाड़ी होने के कारण वह जंगली और पहाड़ी स्थानों की कठिनाइयों से भली-भांति परिचित रहते हैं। कुकड़ी (कटार) गोरखा जाति का राष्ट्रीय अस्त्र है। अँग्रेज़ों के साथ तथा दूसरी जातियों के साथ युद्ध करके गोरखा जाति ने अपनी वीरता का अच्छा परिचय दिया है।

गोरखा लोग रिश्वत नहीं लेते। वह रिश्वत देते भी नहीं हैं। नैपाल के सरदारों ने न तो कभी रुपया लेकर कोई काम किया और न कभी रुपया के ज़ोर से दूसरे से ही काम करवाया है।

गोरखा सैनिक भीषण खतरे के समय भी शान्त तथा आज्ञा पालक बना रहता है। एक बार सिरमूर बैटेलियन के कर्नल यंग ने अपने मित्र कर्नल चिल्डर्स के साथ देहरादून से कुछ मील पर एक शेर देखा। वह हाथी पर सवार होकर उस स्थान पर गये जहां शेर घूम रहा था। शेर झाड़ियों के बीच छिपा था उन्होंने शेर को ढूंढ़ा परन्तु न पाया। तब उसे भड़काने लगे। परन्तु फिर भी असफल रहे और मजबूर होकर वापस चले आ रहे थे।

एक गोरखा सिपाही ने कर्नल को हाथी पर जाते देखा। वह भी हाथी के पीछे पीछे चला गया। वह अपने कंधे पर बन्दूक लिये हुये थे। जब साहब लौटने को हुये तो गोरखा सैनिक यकायक गुठनों पर बैठ गया और मारने के लिये अपनी बन्दूक तानी।

उसे इस दशा में देख कर्नल और उसके साथी का



ध्यान उस ओर आकर्षित हुआ। परन्तु गोरखे सैनिक ने गोली नहीं चलाई। शेर ने भी सैनिक को देख लिया था। शेर तथा सैनिक की आँखें चार हो गई थीं। सैनिक की बन्दूक से तीन क़दम पर ही झाड़ियों के बीच में शेर बैठा था।

कर्नल साहब ने शीघ्र ही उस ओर हाथी बढ़ाया। वह गोरखा सैनिक की बग़ल में हाथी ले जाकर शेर को देखने लगे परन्तु फिर भी न देख सके।

शेर को देखने के लिये साहब ने बन्दूक हटाने की आज्ञा दी। गोरखा सैनिक ने बन्दूक उसी प्रकार सावधानी के साथ हटाया जिस प्रकार वह फौजी परेड में था। साहब ने फिर भी कुछ न देखा और सैनिक को फिर बन्दूक तानने को कहा। सैनिक उसी प्रकार निशाना लगाकर फिर बैठ गया। साहब को उस सैनिक की वीरता पर आश्चर्य हुआ और वह हाथी से उतर कर उसके समीप गये और उसकी बन्दूक की सीध में शेर को देखने लगे पर फिर भी वह शेर को नहीं पहचान सके।

साहब ने अपनी बन्दूक ठोक की और गोरखा सैनिक को गोली चलाने के लिये कहा। गोरखा ने

गोली मार दी। इतने में शेर के तड़पने तथा बन्दूक के गरजने का भीषण शब्द हुआ और फिर सनासन हो गया। धुवाँ के साफ होने पर झाड़ियों के मध्य पड़ा हुआ देखा। गोली र के मस्तक के मध्य लगी थी और मस्तक पार करके मस्तिष्क में प्रवेश कर गई थी।

गुरुंग जाति

गुरुंग जाति के लोग हिन्दू धर्म के रीत रिवाज, और संस्कारों को मानते हैं। वह ब्राह्मणों को सबसे बड़ा मानते हैं इसी कारण हिन्दू माने जाते हैं। परन्तु उन्हें यज्ञोपवीत ग्रहण करने की आज्ञा नहीं है। वह क्षत्रियों के नीचे माने जाते हैं। गुरुंग लोग मगर और खास लोगों की अपेक्षा अधिक बड़े तथा शक्तिशाली होते हैं। गुरुंग जाति भी क्षत्रियों की भांति लड़ाकू तथा सशस्त्र जाति है।

गुरुंग जाति चार जात और सोलहजात दो प्रधान भागों में विभाजित है। चार जात में गाले या घाले, गोटानी (गुंडानी) लामा और लाम्चाने चार वर्ग

सम्मिलित हैं। यह चारों वर्ग भी उपवर्गों में विभाजित हैं। उपवर्ग वंशों में विभाजित हैं।

कहा जाता है कि एक ठाकुर राजा ने लाम्जुंग के गाले राजा के पास पत्री भेजी कि वह अपनी पुत्री उसे दे दे। गाले राजा ने एक रूपवती सुंदर लड़की भेज दी। ठाकुर राजा ने उससे ब्याह कर लिया और उससे कई एक संतानें उत्पन्न हुई। कुछ वर्षों के पश्चात् मालूम हुआ कि वह राजा की लड़की न थी। वरन् राजा के लौंडी की लड़की है। तब ठाकुर राजा ने क्रोध में आकर गाले राजा से उसकी लड़की फिर मांगी। इस बार गाले राजा ने अपनी लड़की दी। उस लड़की से तीन पुत्र हुये। उन्हीं तीन पुत्रों की संतान गोटानी, लामा और लाम्चाने हैं। लौंडो रानी की संतान सोलहजात वाले हैं।

कहा जाता है कि एक बार कर्नल लक्ष्मण ने प्रस्ताव किया कि चारजात का जो गुरुंग उनकी पुत्री से ब्याह करेगा उसे वह अपनी लड़की के बराबर सोना देंगे। इस पर गोटान जाति का एक गरीब राज़ी होगया परन्तु शीघ्र ही वह चारजात से निकाल कर सोलहजाति

में कर दिया गया और ब्याह रुक गया। यह मामला आगे बढ़ा और राज्य दरबार में पहुँचा इस पर सर जंगबहादुर ने चारजात और सोलहजात के भेद भाव को मिटाने के लिये गुरुंग जाति का इतिहास मांगा। उन्हें इतिहास दिया गया। उसे पढ़कर उन्होंने फैसला कर दिया कि सोलहजाति के लोग चारजात वालों से नीचे हैं। इसलिये उन्हें अपनी वर्तमान स्थिति में ही रहना चाहिये।

गुरुंग जाति ने अपने समय को बारह वर्ष में विभाजित किया है और प्रत्येक वर्ष का नाम रख दिया है। यह बारहों नाम क्रमशः बार बार आते रहते हैं। बारह वर्षों के नाम क्रमशः यह हैं। इसके द्वारा अवस्था के वर्षों का ज्ञान शीघ्र हो जाता है।

गुरुंगकुल	खास कुल	भारतीय
फोलो	मृग	मृग या हिरण
चूलो	मूस	चूहा
लोलो	गाय	गाय
टोलो	बाघ	बाघ
हिलो	बिरालो	बिल्ली

मुपरिल्लो	गरुड़	गरुड़
सपरिल्लो	सर्प	सर्प, सांप
टालो	घोड़ा	घोड़ा
लुलो	भेड़	भेड़
मालो	बन्दर	बन्दर
चालो	चर	चिड़िया, पक्षी
ह्लिलो	कूकुर	कुत्ता।

स्वयम्भू नाथ

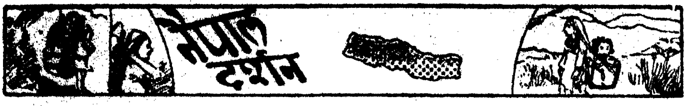
नैपाल में बौद्ध लोगों का सबसे पवित्र स्थान स्वयम्भू नाथ है। प्राचीन काल में जब काठमंडू की घाटी एक झील थी तो विपस्या नामी बौद्ध ने उसका भ्रमण किया। उसने देखा कि झील में प्रत्येक भांति के पानी वाले पौदे उगते हैं परन्तु कमल नहीं उगता। उन्होंने कमल की जड़ लेकर मंत्र उस पर फूंक कर झील में डाल दिया और आकाश वाणी की कि जब कमल का फूल खिलेगा तो आग की चिंगारी की भांति उसमें से स्वयमभू नाथ देव निकलेंगे और तब झील सूख कर एक उपजाऊ सघन घाटी बन जावेगी।

जब स्वयमभू देव की उत्पत्ति हुई तो उनके वरदान से मंजुर्सी बौद्ध ऋषि ने पहाड़ काट कर झील का पानी निकाला और वहां घाटी बनाया।

स्वयमभू नाथ का स्तूप उसी स्थान पर बनाया गया है जिस स्थान पर विपस्या ने कमल की जड़ फेंकी थी। यहां सर्वप्रथम तीसरी सदी ईसा के पूर्व में मंदिर बनाया गया था। अब उसमें बहुत परिवर्तन होगया है। यह मंदिर मैदान से ३०० फुट ऊंची पहाड़ी पर स्थित है। मंदिर तक पहुँचने के लिये सीढ़ियां बनी हैं। सीढ़ियों की रक्षा के लिये पांच ध्यानी बौद्धों की मूर्तियां हैं।

आधुनिक स्तूप ईंट और बहुमूल्य पत्थर के टुकड़ों का बना है। उसके ऊपर से सफेद प्लास्टर किया हुआ है। स्तूप के ऊपर एक बड़ा पीतल का दुर्ग है। यह दुर्ग वर्गाकार चबूतरे पर बना है। दुर्ग के ऊपर १३ गोले बने हैं जो १३ बौद्ध आकाशों के साक्षी हैं। चौकोर चबूतरे के चारों ओर आगे दो दो आंखें बनी हैं।

बड़े स्तूप के चारों ओर और दूसरे छोटे छोटे कई एक स्तूप हैं जिसमें भिन्न भिन्न लामा तथा साधुओं की



समाधियां और धुनियां हैं। इन स्तूपों के चारों ओर भूरे बन्दर सदैव चक्कर लगाते रहते हैं। जब यात्री मन्दिर के दर्शन को आते हैं तो वह इन बन्दरों को अवश्य भोजन देते हैं।

शीतला और बौद्धनाथ मंदिर

बड़े स्तूप के समीप दो कोठे का हरिती (शीतला) देवी का हिन्दू मन्दिर है। यह मन्दिर नैपाल में बौद्ध तथा हिन्दू धर्म के समीपवर्ती सम्बन्ध का एक बड़ा उदाहरण है। इस मन्दिर के आंगन में ध्यानी बौद्ध अक्षोभ्य का बज्र है। यह एक धातुमंडल पर रक्खा है। धातुमंडल बारा भागों में विभाजित है। प्रत्येक भाग में एक जानवर की मूर्ति बनी है। यह मूर्तियां तिब्बती वर्ष के बारा महीनों के चिन्ह हैं।

स्वयमभू नाथ के मन्दिर ईसा से कुछ वर्ष पूर्व बनकर तयार हुआ था। इसके टोरन पीतल के हैं। इस महान स्तूप के ऊपर एक सुन्दर धातु का छाता बना हुआ है। जो राज्य चिन्ह है। बौद्धनाथ का स्तूप

एक गोलाकार दीवार के भीतर स्थित है। इस दीवार पर बाहर की ओर १०८ प्रार्थना चक्र बने हैं।

प्रधान स्तूप के चारों ओर आंगन में छोटे छोटे कई एक स्तूप हैं जिनमें प्रत्येक दलाई लामा की हड्डियां रक्खी गई हैं।

प्रत्येक बारहवें वर्ष फरवरी मास में बौद्धनाथ स्तूप से पानी बाहर निकलता है। यह पानी बड़ा पवित्र माना जाता है और दूर दूर से यात्री इसे पीने आते हैं। इसका पानी सबसे पहले लासा के दलाई लामा को भेजा जाता है। बौद्ध स्तूप की देख भाल के लिये एक चीनी लामा रहता है।

काठमांडू नगर

काठमांडू के बड़े परेड वाले मैदान के पश्चिम प्राचीन नेवार नगर स्थित है। इसमें ऊँचे भवन बड़े मीनार तथा सँकरी गलियां हैं। दर्बारस्क्वाएर में एक ओर एक बड़े लम्बे चौड़े मैदान के चारों ओर प्राचीन राजाओं के महल बने हैं। महलों के समीप ही टलेजू

देवी का मन्दिर है जो नेपाल राज्य-घराने की देवी मानी जाती हैं। नगर में सब कहीं चारों ओर मन्दिर, समाधियां और ऊँचे बड़े स्तम्भ हैं जिनमें राजाओं तथा साधु संतों की पीतल की मूर्तियां हैं।

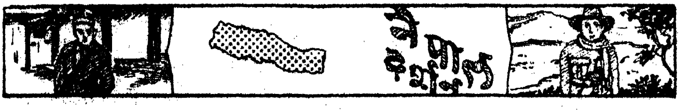
पगोडा (बौद्ध मंदिर) श्रेणी के भवन लाल ईंट के बने हैं। उनकी छतें खपड़ों की हैं। और यह छतें सुन्दर लकड़ी के ढांचों पर बनी हैं। द्वार भी लकड़ी के हैं। द्वारों की चौखटों की कला भी बड़ी सुन्दर है। लकड़ी की बनी वस्तुओं पर चमकीली पालिस की जाती है और छतों पर पीतल की चद्दरें रख दी जाती हैं जिससे सूर्य के प्रकाश में वह चमकने लगती हैं।

नेवार जाति के इस प्राचीन कला वाले भवनों तथा मंदिरों के मध्य हनुमान ढोका है। यह एक नवीन कालीन भवन है। यह एक बड़ा स्वेत भवन है। इसमें बड़े बड़े कमरे बने हैं जहां राज्य की ओर से निश्चित अवसरों पर उत्सव मनाये जाते हैं। इन अवसरों पर राजा के सैनिक, दरबारी तथा प्रजागण एकत्रित होते हैं।

जब इस भवन में नैपाल राजा का दरबार लगता

है तो राजा के शरीर रक्षक सैनिक बड़े घोड़ों पर सशस्त्र सवार होकर आते हैं। राजा के शरीर रक्षक सैनिकों के साथ ही साथ प्रधान मंत्री के भी शरीर रक्षक सैनिक आते हैं। राजा, प्रधान मंत्री, दूसरे मंत्रीगण तथा राज्य दरबार के बड़े अफसर और दूसरे दरबारी लोग सभी खुली गाड़ियों में बैठते हैं। सभी एक बड़े जुलूस में चलते हैं। ऐसे जुलूस में नैपाली सेना के सैनिक बड़े ही शानदार प्रतीत होते हैं। सैनिकों का कोट गहरे लाल रंग का होता है और टोपियों में मोती तथा हीरे जवाहिरात जड़े रहते हैं।

नेवाड़ नगर के आगे पूर्व की ओर बड़े मैदान के चारों ओर गोरखा जाति का बनाया हुआ नवीन काठमांडू नगर है। आधुनिक नगर के भवन प्राचीन पगोडा कला के नहीं हैं। यहां अंग्रेज़ी ढंग के बने हुये बैरेक, स्कूल, कालेज, अस्पताल और जेलघर हैं। इसी भाग में राजा, महाराज नैपाल, मंत्रीगण और दूसरे बड़े सरदारों के महल बने हैं। यह सभी फ्रांसीसी कला के हैं और उन्नीसवीं तथा बीसवीं सदी में बनाये गये हैं। इस भाग में बड़ी चौड़ी सड़कें हैं तथा बड़े बड़े खेलने



के मैदान हैं। नगर के इस भाग की शान-शौकत तथा विलासता देख कर आश्चर्य सा होता है कि क्या सच-मुच ही यह एक पहाड़ी नगर है।

यद्यपि नैपाल एक राज्य है परन्तु यहाँ के राजा धार्मिक रूप से केवल नाम के लिये राजा बने हैं। नैपाल राज्य के शासन की बागडोर वहां के प्रधानमंत्री के हाथ है। प्रधान मंत्री नैपाल के महाराजाधिराज कहलाते हैं।

नैपाल के महाराजा नवीन विचार के हैं। वह अपने देश में प्रत्येक भांति की नवीनता का प्रदर्शन करना चाहते हैं। परन्तु वह कुछ पश्चिमी सभ्यता की बनी हुई वस्तुओं को अपने देश में प्रवेश करने से रोकते हैं। रोकने वाली वस्तुओं में सिनेमा का नम्बर प्रथम है। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि जब समस्त संसार में सिनेमा (बाइस कोप) का इतना रिवाज है महाराज नैपाल उसे अपने राज्य में प्रवेश नहीं होने देना चाहते। महाराज का विचार है कि चूंकि सिनेमा में मानव जीवन का प्रत्येक चित्रपट दिखाया जाता है इसलिये उसका देखने वालों पर बुरा प्रभाव पड़ता है जिससे उनका चाल-चलन बिगड़ जाता है।

देश दर्शन

एक बार एक नैपाली राजदूत के नौकर दिल्ली के एक सिनेमा घर में चित्रपट देखने गये। जब वे लौटे तो बड़े भयभीत तथा घबड़ाये से प्रतीत हुये और कहा कि चित्रपट के मर्द पात्रों का मनुष्य होना असम्भव है। और यदि वह मनुष्य हैं तो फिर उनका जीना व्यर्थ है। क्योंकि वे मेहरे हैं और उनका चाल-चलन बहुत खराब है।

चित्रपट के मूवी (चलने फिरने वाले) स्टारों के सम्बन्ध में नैपाली लड़ाकू लोगों का विचार उपर्युक्त घटना से भली-भांति स्पष्ट है।

नैपाल राज्य में काठमांडू तथा दूसरे बड़े नगरों में १० बजे रात को कर्फ्यू का घंटा बज जाता है। उस समय प्रत्येक व्यक्ति को अपने घर में चले जाना चाहिये। यदि कोई व्यक्ति १० बजे रात के बाद सड़कों तथा गलियों पर पाया जाता है तो उसे सरकारी नौकर पकड़ लेते हैं। उसे रात जेल में बितानी पड़ती है। कुछ त्योहार के अवसरों पर छोड़ कर शेष सभी दिनों में जुआ खेलने तथा शराब पीने की राज्य में मनाही है। त्योहारों में दुर्गा पूजा सबसे अधिक प्रसिद्ध है। यह त्योहार १०

दिनों तक मनाया जाता है। इस समय हजारों भैसे दुर्गा देवी को बलिदान दिये जाते हैं।

पाटन नगर

पाटन नगर काठमांडू के आधुनिक नगर के समीप ही स्थित है। यह नैपाल राज्य की राजधानी रह चुका है। इस नगर की संकरी गलियों से निकलने के पश्चात् दरबार स्क्वाएर मिलता है। यह स्थान बड़ा रमणीक तथा मनोहर है। यहां प्राचीन पगोडा, मन्दिर, बड़े स्तम्भों पर मूर्तियां, घंटे, सुन्दर भवन, खेलने तथा टहलने के मैदान, सुन्दर सरोवर आदि हैं। इन सभी स्थानों की कला-कौशल तथा बनाने की शैली बड़ी ही सुन्दर है। सभी मन्दिरों तथा भवनों से चमक दमक की किरणों सी निकलती दिखाई पड़ती है। मन्दिरों के स्तम्भ तथा दुर्ग बड़े ही विशाल तथा मनोहर हैं। कुछ स्तम्भ, दुर्ग और मंदिर स्वेत चांदी के रंग के हैं।

पाटन में मछेन्द्रनाथ का मन्दिर बड़ा ही मनोहर है। यह मन्दिर नगर के किनारे पर स्थित है। इस मन्दिर के चारों ओर चहारदीवारी तथा यात्रियों के

विश्रामघर बने हैं। मन्दिर एक बड़े मैदान में स्थित है। इस मन्दिर में तीन कोठे हैं। तीनों की छतें तथा ओल्तियां बड़ी सुन्दर हैं। पगोडा की ओलितयों में छोटी छोटी घंटियां लटकती हैं।

मछेन्द्र देव पाटन के सबसे बड़े स्थानीय देवता माने जाते हैं। वह नैपाल के रक्षक समझे जाते हैं। कहा जाता है कि नैपाल राज्य पर जब जब विपत्ति आती है तो मछेन्द्र देव नैपाल के महाराजा को दर्शन देते हैं। मछेन्द्र देव की स्मृति में मछेन्द्र-यात्रा त्योहार मनाया जाता है। यह यात्रा जून के महीने में होती है। उस समय २५ फुट लम्बे बीच वाले रथ में मछेन्द्र देव की मूर्ति निकाली जाती है और समस्त प्रजा उनका दर्शन करती है और पान-फूल चढ़ाती है। मछेन्द्र यात्रा के दिन वर्षा प्रायः अवश्य होती है। नैपाली लोगों का विचार है कि मछेन्त्र-यात्रा-त्योहार मनाने के कारण ही वर्षा होती है। मछेन्द्र देव की पूजा हिन्दू तथा बौद्ध दोनों मतों के लोग करते हैं।



दर्शनीय स्थान

नेपाल राज्य का सब से अधिक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान पशुपति नाथ महादेव का मंदिर है। यह मंदिर पशुपति नगर में बाघमती नदी के तट पर स्थित है। मंदिर दो कोठे का बना है और सीढ़ियां पानी से मंदिर के ऊपर तक जाती हैं।

काठमांडू का क़लईदार दुर्ग दर्शन योग्य है। क़लईदार दुर्ग एक बड़े सफेद गुम्बद के ऊपरी भाग में बना है। दुर्ग के ऊपर एक चमकता हुआ छाता है। यह बौद्धों का एक बड़ा ही पवित्र स्थान है। दुर्ग के चारों ओर चमकती हुई आंखें बनी हैं। आंखों के नीचे प्रत्येक ओर प्रश्न सूचक संकेत बने हैं। बौद्ध नाथ स्तूप के चारों ओर १०८ प्रार्थनावाली पहियां हैं।

भटगांव नगर के दरबार महल का स्वर्णद्वार भी दर्शनीय है। इसके चारों ओर मंदिर तथा महल बने हैं।

काठमांडू नगर का बड़ा बौद्ध स्तूप भी दर्शनीय है। स्तूप एक बड़े आंगन में बना है। स्तूप के चारों ओर

छोटे मंदिर हैं जिनमें लोग पूजा करते हैं। स्तूप में जाने की मनाही है। स्तूप के गुम्बद के ऊपरी भाग में सुंडाकार १३ सीढ़ियों वाला दुर्ग है। काठमांडू के दर्बार हनुमान जी की मूर्ति बड़ी विशाल तथा दर्शनीय है। यह मूर्ति एक पत्थर के स्तम्भ पर है। मूर्ति के ऊपर एक छाता बना है। नैपाल में हनुमान जी की पूजा होती है। यहीं एक बड़े मन्दिर में बुद्ध भगवान की चार मूर्तियां एक साथ एक ही शिला में बनी हैं। यह लक्ष्मी की मूर्ति मानी जाती हैं। कहा जाता है कि यह मूर्तियां एक कमल के फूल से प्राप्त हुई थीं।

स्वयम्भूनाथ पहाड़ी तथा मंदिर भी दर्शन योग्य हैं। नीलकंठ स्थान पर नारायण भगवान की विशाल मूर्ति दर्शनीय है। भगवान सर्पों की शय्या पर विश्राम करते हुये दिखाये गये हैं। इस मूर्ति का पता एक किसान ने लगाया था। वह किसान अपने लिये एक तालाब खोद रहा था।

महर्षि मंजुश्री की मूर्ति बड़ी विशाल है। मूर्ति चतुर्भुजी है। दाहिने हाथ में वह विशाल तलवार है

जिससे महर्षि मंजुर्सी ने हिमालय पर्वत काटा था। काठमांडू की गरुड़ भगवान की मूर्ति भी देखने योग्य है।

काठमांडू का घंटों वाला मन्दिर देखने योग्य है इस मन्दिर में लोग घंटे और दूसरे बर्तन चढ़ाते हैं। बर्तनों की चमक से मन्दिर चमकता रहता है। द्वार पर दो सिंह मूर्तियां हैं। चारों ओर घंटियां रस्सी द्वारा बंधी हैं। हिन्दू तथा बौद्ध दोनों धर्म के लोग इस मन्दिर में दर्शन को जाते हैं।

महाराजा का सिंह दरबार तो बड़ा ही सुन्दर है। काठमांडू नगर के महलों के द्वारों, झरोखों और खिड़कियों की कारीगरी तथा नक्क़ाशी इतनी अद्भुत है कि वह देखने में लेस की भांति प्रतीत होते हैं।

नैपाल की तराई में और पर्वतों पर भांति भांति के प्राचीन स्थान तथा प्राकृतिक स्थानों की सुन्दर छटायें भी ऐसी हैं जो यात्री के ऊपर मोहन मंत्र डाल देती हैं। मनुष्य उन्हें देखकर चकरा जाता है।

ज़िले

नैपाल राज्य साधारणतः तराई तथा पर्वत दो महान भागों में बटा है। तराई भारतीय ब्रिटिश सीमा से आरम्भ होकर उत्तर की प्रथम पर्वतीय श्रेणी तक फैली है।

नैपाल की तराई १४ ज़िलों में बाँटी गई है। तराई के चौदह ज़िलों के नाम मोरंग, रपतरी, परसा, बारा रौटहट, सरलाही, पहोतरी, बुटवल, पाल्ही, डाङ्कू, बांकी बरदिया, कैलाली और कंचनपुर हैं।

शासन के ध्यान से यह चौदहों ज़िला चार भाग में बंटे हैं। प्रत्येक भाग के अलग अफसर हैं। इन अफसरों को बड़ा हाकिम कहते हैं। यह बड़ा हाकिम राजा के दरबार का स्थानीय सदस्य माना जाता है और अपने इलाके के सभी बातों की वह देखभाल कर सकता है। बड़ा हाकिम की सहायता के लिये सहकारी अफसर सूबा रहता है। बड़ा हाकिम का दफ्तर अमीनी गोस्वाड़ा के नाम से प्रसिद्ध है। सूबा अपने विभाग का सब से बड़ा कर सम्बन्धी अफसर तथा शासक माना जाता है।

हाकिम के अधिकार में पुलिस तथा न्याय सम्बन्धी कार्य रहते हैं। वह थाना तथा चौकियों की पुलीस की सहायता से शासन करता है।

हनुमान नगर (अमीनी गोस्वाड़ा कचेहरी) में मोरंग ज़िले के वह भाग शामिल हैं जिसमें रंगीली अमीनी कचेहरी साहेबगंज थाना, गडरिया चौक, हरीनगर चौक, पारतगंज, झापाअमीनी कचेहरी, आठमौज़ा चौक, कालिका झार चौक, पाठामारी चौक, महेशपुर, धुलाबारी और महाभारत चौक शामिल हैं।

हनुमान नगर विभाग में सप्तरी जिला की हनुमान नगर अमीनी कचहरी, भगवानपुर थाना, सिरहा थाना, हरिपुर और पाटी चौकी स्थान शामिल हैं।

२—बोर गंज अमीनो गोस्वाड़ा कचेहरी में बीरगञ्ज अमीनो कचेहरी, उदयपुर थाना, कवाही थाना, ताजपुर, टिऊकी चिट्ठी, सुमीश्वर, सिमरावासा, भेडाहा, करचोखा, बिकनाबेरी, करमईया, त्रिबेनी, अधभरा और पटखा चौकियां शामिल हैं। यह सभी परसा और बारा ज़िला में हैं।

बीरगंज विभाग में रौटहट जिला के कडरबना

अमीनी कचेहरी, मलांगावा, सरलाही और रामपुरवा थाना, मधुवा परसा, समरपुर, खैरवन और गौर चौकियां शामिल हैं।

सरलाही ज़िला और महोतारी ज़िला भी बीरगंज में शामिल हैं।

३—टौलिवाहा विभाग में बुटवल पाल्ही और डांक ज़िले शामिल हैं।

४—नैपाल गंज विभाग में बांकी, बरदिया, कैलाली और कंचन पुर ज़िले शामिल हैं।

तराई के निवासियों को पत्र लिखते समय गांव, अमीनी थाना या अमीनी कचेहरी या अमीनी गोस्वाड़ा कचेहरी या जिला का नाम अवश्य लिखना पड़ता है।

नैपाल राज्य का पर्वतीय भाग प्रथम श्रेणी तथा तिब्बत सीमा के मध्य स्थित है। इसमें २३ तहसीलें शामिल हैं।

इन चौबीस तहसीलों के नाम ईलाम, धनकुटा, पूर्व ओर की तहसील नम्बर १, पूर्व तरफ की तहसील नम्बर २, पूर्व ओर की तहसील नम्बर ३ व ४, पश्चिम

और की तहसील नम्बर १,२,३,४ और ५, पाल्पा, जुमला, जाजर कोट, दुल्लु, दैलेख, बझांग, सल्लयाना, प्यूठाना, अछाम ठलहरा, डोटी, काठमाँडू, पाटन और भातगाँव हैं।

तहसील ईलाम का सदर मुक़ाम ईलाम है और प्रधान अफसर कर्नल है। यह तहसील ५ जिलों में विभाजित है।

धनकुटा तहसील २७ जिलों में विभाजित है। तहसील का सबसे बड़ा अफसर गवरनर है और राजधानी धनकुटा है। पूर्वी तहसील नम्बर १ में ५३ थुम हैं। इसका प्रधान अफसर हाकिम कहलाता है जिसका सदर मुक़ाम धूली खेल है।

पूर्वी तहसील नम्बर २ का प्रधान अफसर हाकिम है जिसका सदर मुक़ाम ल्याङ ल्याङ है। यह तहसील ५६ थुमों में बंटी है।

नैपाल के दूसरे प्रसिद्ध देवता मंजुर्सी चीन में पांच चोटी वाले पर्वत पर रहा करते थे। मंजुर्सी के आगमन के पहले काटमांडू के स्थान पर एक बड़ी झील थी। मंजुर्सी ने अपनी तलवार से झील के चारों ओर के

पर्वतों को काट कर मार्ग बनाया। जिससे झील का पानी बह गया। आज भी पर्वतों के मध्य का द्वारमार्ग कोट बार (तलवार का काटा हुआ) के नाम से प्रसिद्ध और बाघमती उसी मार्ग से उपजाऊ घाटी का पानी है लेकर बहती है।

मंजुर्सी एक बौद्ध देव हैं। इनकी पूजा चीन तिब्बत और नैपाल में होती है। नैपाल के हिन्दू भी इन्हें पूजते हैं। इनकी समाधि तथा मन्दिर पाटन में स्थित है। मन्दिर में इनकी एक बड़ी चतुर्भुज मुर्ति है। दाहिने हाथ में विशाल तलवार है जिससे उन्होंने पर्वत काटा था।

भटगांव

भटगांव नैपाल की घाटी का तीसरा बड़ा नगर है। यह नगर पाटन से ७ मील की दूरी पर स्थित है। पाटन से भटगांव मोटर जाती है। मोटर मार्ग ऊँचा-नीचा और कठिन है। भटगांव जाने के लिये तिब्बत की ओर से टट्टू द्वारा सबसे आसान और अच्छा मार्ग है।

अठारहवीं सदी में यह नगर महाराज भूपतिन्द्रमल

की राजधानी था। वह कला-कौशल के बड़े प्रेमी थे। इन्होंने ही विशाल दरबार हाल बनवाया था। इस दरबार का द्वार सोने का है। इसकी खिड़कियों की कारीगरी बड़ी ही सुन्दर है। द्वार के सामने एक बड़े पत्थर के स्तम्भ पर भूपतिन्द्र महाराज की कांसे की मूर्ति स्थापित है। मूर्ति के आगे पीतल का एक बड़ा घंटा है। प्राचीन काल में इसी घंटे की नाद से प्रजा को महल के सामने एकत्रित किया जाता था।

भटगांव एक अद्भुत नगर है। इसके भिन्न-भिन्न भाग में इसकी सुन्दर वस्तुएँ बिखरी हैं। कहीं सीढ़ियों के ऊपर सफेद छोटा मन्दिर दिखाई पड़ता है जिसकी रक्षा देवगणों की मूर्तियां कर रही हैं तो कहीं सुन्दर बाटिका दिखाई पड़ती है जिसमें फलदार वृक्षों तथा फूलदार पौधों की भरमार है और चिड़ियां चहचहा रही हैं।

नगर में छोटी छोटी सुन्दर गलियों की दूकानें तथा घर बड़े ही सुन्दर दिखाई पड़ते हैं जिनमें सुन्दर कारीगरी वाली लकड़ी की खिड़कियां तथा द्वार लगे हैं। गलियों से निकलने पर यकायक एक बड़ा चौराहा मिल जाता है।

इस चौराहे के समीप पांच कोठे वाला विचित्र मंदिर है। इस मंदिर को महाराज भूपतिन्द्र मल ने १७०० ई० में बनवाया था। राजा को मन्दिर बनवाने इतना शौक था कि इस मंदिर के लिये वह स्वयम् ईंट तथा पत्थर लाया। उसकी प्रजा ने उसका अनुकरण किया पांच दिन के भीतर ही इतना सामान इकट्ठा हो गया जिससे मन्दिर तयार हो सकता था।

यह मन्दिर बड़ा ही सुन्दर तथा सुडौल बना है। पहले पांच कुर्सी दार बड़े चबूतरे बनाये गये हैं जो क्रमशः ऊंचे तथा छोटे होते गये हैं। पांचवें चबूतरे पर मंदिर बनाया गया है। चबूतरे पीली ईंटों के बनाये गये हैं। मन्दिर तक पहुंचने के लिये धरती से कुर्सियों में होकर सीढ़ियों का एक मार्ग है। इस सीढ़ी मार्ग के दोनों ओर शेर, हाथी और देवगणों की मूर्तियां बनी हैं।

सब से निचली पहली सीढ़ी पर जयमल और पत्ता दो बड़े सूरमा हैं। यह वीर साधारण मनुष्यों से १० गुनी ताक़त रखते थे। दूसरी सीढ़ी पर २ हाथी हैं। इन हाथियों के जयमल तथा पत्ता से १० गुनी

ताक़त थी। तीसरी कुर्सी पर दो शेर हैं। यह शेर तीसरी सीढ़ी वाले हाथियों से १० गुनी ताक़त वाले थे। चौथी सीढ़ी पर दो मूर्तियां ऐसे देवों की हैं जिनका शरीर शेर और गिद्ध का है। यह शेरों से दसगुने बली थे। पांचवीं और अंतिम सीढ़ी पर दो देवियों की मूर्ति है। यह सिंहनी और बाघनी देवियां हैं। यह चौथी सीढ़ी वालों से १० गुनी अधिक शक्ति रखती थीं।

इन पांचों सीढ़ियों के ऊपर पांच कोठों का मन्दिर है जिसकी छतें पगोडा की हैं। पांचों पगोडा छतें भूरे खपड़ों की हैं और क्रमशः छोटी होती गई हैं। पांचवें के सिरे पर कांसे का एक बड़ा घंटा है। इस मन्दिर में किसी भी देवता की मूर्ति नहीं है। यह तांत्रिक देवता के लिये बनाया गया था। स्थानीय लोग इसे भैरों देव का पवित्र स्थान मानते हैं। काल-भैरों काली तथा शंकर जी के संहार रूपी भयानक औतार माने जाते हैं।

नैपाल के पवित्र मंदिरों में योरुपीय लोग प्रवेश नहीं कर सकते हैं। उन्हें नैपाल सरकार की ओर से मनाही है।

देश दर्शन

पशुपतिनाथ

यह नगर नैपाल राज्य की काशी है। पशुपति नाम शिव भगवान का है। यहां शिव भगवान भैंसा का रूप धारण करके प्रकट हुये थे। उन्हीं के नाम पर इस नगर का नाम पशुपति रक्खा गया है। बाघमती नदी इस नगर होकर बहती है। इसी पवित्र नदी के तट पर हिन्दू लोग अपने मृतक शरीर को जलाते हैं और फूल (राख) को नदी में बहाते हैं।

इस नदी के दो केन्द्रीय पुलों के आगे नदी के बहाव के ऊपर की ओर प्रजा के लिये मृतक शरीर जलाने वाले घाट हैं और नीचे को ओर के घाटों पर राज्य घराने का ही मृतक संस्कार हो सकता है। नदी के दोनों किनारों पर मंदिर तथा समाधियां बनी हैं। इन मंदिरों, समाधियों तथा पवित्र स्थानों से नदी की तली तक पक्की सीढ़ियों के सुन्दर घाट बने हैं।

पशुपति में सबसे प्रसिद्ध स्थान पशुपतिनाथ महादेव का मंदिर है। यह मन्दिर समस्त नैपाल में सब से अधिक पवित्र माना जाता है। यह मन्दिर दो कोठों का बना है। पशुपतिनाथ महादेव के चारों ओर और दूसरे

छोटे मन्दिर तथा समाधियां हैं। भारतवर्ष के हिन्दू तीर्थ यात्री पशुपति नाथ महादेव का दर्शन करने के लिये जाते हैं।

यह मन्दिर बड़ा पवित्र माना जाता है। १६ सौ ई० में गंगा रानी नेवाड़ी महारानी ने पशुपति नाथ के घंटे पर बजाने के लिये एक रस्सी बांध दी थी। यह रस्सी दो मील लम्बी थी। रस्सी का एक सिरा काठ मांडू में राजमहल में बांधा गया था।

१८२६ ई० में महाराज विक्रमशाह ने १ लाख २५ हज़ार नारंगियां पशुपतिनाथ पर चढ़ाई थीं। यह सभी नारंगियां मंदिर के चारों ओर ढेर बनाकर रक्खी गई थीं।

पशुपति नाथ महादेव समस्त भारतवर्ष, नैपाल, तिब्बत और चीन में प्रसिद्ध हैं। हिन्दू मत के लोग उन्हें शिव अवतार मानते हैं और बौद्ध लोग अवालोकिटेश्वाड़ा के नाम से पूजते हैं। नैपाल का हिन्दूमत हिमायान बौद्ध मत से बहुत कुछ मिलता जुलता है। बौद्ध मत वाले धार्मिक नाच गानों के बड़े प्रेमी होते हैं। हिन्दू लोगों का धार्मिक नाच गाना नैपाली रीत-रिवाज से बिलकुल

विरुद्ध होता है। प्रत्येक मंदिर में नाचने गाने वाली लड़कियाँ होती हैं।

हिन्दू धार्मिक नाच में सबसे प्रसिद्ध वह है जिसमें हिन्दू धर्म के तीनों देवता ब्रह्मा विष्णु और महेश की लीला साथ साथ दिखाई जाती है। नैपाल में इन तीनों देवों को लक्ष्मी रूप दिया है। सरस्वती सृष्टि कर्ता, लक्ष्मी पालक और काली संहार कर्ता रूप मानी गई हैं।

सरस्वती, लक्ष्मी और काली की लीला मंदिर की नाच-गान करने वाली लड़कियां नहीं करतीं वरन् पुरुष लोग करते हैं। काली के साथ काल भैरों भी काली की सेवा में रहते हैं। लक्ष्मी के साथ साथ उनकी शेर की सवारी रहती है। सरस्वती के साथ उनकी गरुड़ की सवारी रहती है। एक मसखरा हंसाने के लिये योरुपीय भेष में नाचने वालों के साथ कर दिया जाता है। जब यह लीला होती है तो लाखों दर्शक एकत्रित होते हैं।

———

व्यापार

नैपाल राज्य का विदेशी व्यापार दो भागों में बंटा है। १—हिमालय पार तिब्बत के साथ २—ब्रिटिश भारतीय सीमा होकर भारतवर्ष के साथ। तिब्बत के साथ व्यापार करने के लिये दो मार्ग हैं। दो मार्गों में बड़ा मार्ग काठमाँडू से उत्तर-पूर्व की ओर कोसी नदी की सहायक नदी के तट होकर जाता है और कुटो या निलाम के सीमावर्ती स्टेशन से होकर तिब्बत में प्रवेश करता है। कुटो या निलाप का सीमावर्ती स्टेशन १४ हज़ार फुट की ऊँचाई पर स्थित है। दूसरा मार्ग भी काठमांडू से ही चलता है और गंडक नदी की पूर्वी धारा होकर जाता है और किरांग स्थान पर तिब्बत सीमा को पार करता है। किरांग स्थान ६ हज़ार फुट की ऊँचाई पर स्थित है। आगे चलकर यह मार्ग टाइम स्थान पर पहुँचता है। यह स्थान सांपू नदी के तट पर है।

यह दोनों मार्ग बड़े जटिल हैं। इन मार्गों में केवल भेड़ और बकरी बारबरदारी का काम देते हैं। नाज और नमक को छोड़कर शेष दूसरी वस्तुएँ पुरुष तथा

स्त्रियां ले जाती हैं। तिब्बत से नैपाल जो वस्तुएं आयात होती हैं उनमें कस्तूरी, सोहागा, पाश्मिना (शाल का ऊन) मोटा ऊनी कपड़ा, नमक, याक की पूंछ या चौरिस, पीले आर्सेनिक, चांदी, सोने का पाउडर, सुरमा मंजीत, चरस प्रधान है। इनके अतिरिक्त भांति भांति की दूसरी औषधियां तथा सूखे फल भी तिब्बत से नैपाल आते हैं। इन वस्तुओं का अधिकांश भाग नैपाल होकर ब्रिटिश भारत चला जाता है। नैपाल से तिब्बत को तांबे के बर्तन घंटे की धातु, लोहा, नेवर लोगों की बनी वस्तुएं, योरुपीय फुटकर सामान, कड़ी धातु, भारतीय सूती कपड़ा, मसाला, तम्बाकू, पान, सुपारी और बहुमूल्य पत्थर आदि सामान निर्यात किया जाता है।

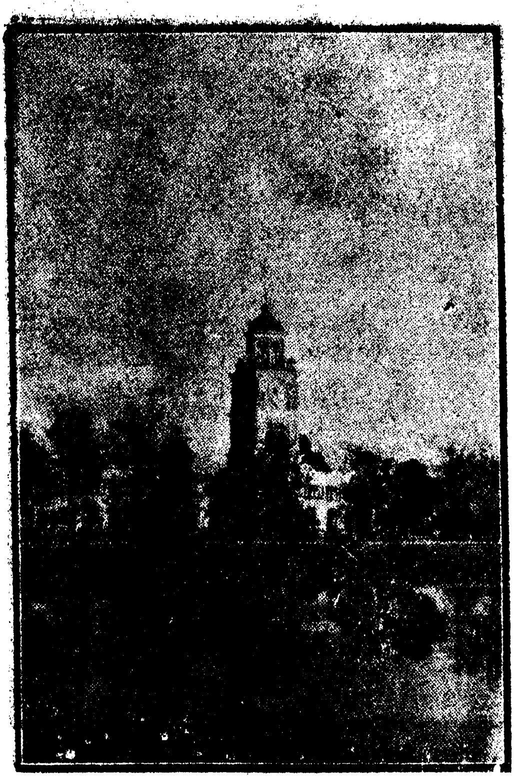
भारतवर्ष के साथ नैपाल राज्य का व्यापार ७०० मील लम्बी सीमा के भिन्न भिन्न भागों होकर होता है। नैपाल राज्य की व्यापारिक नीति नैपाल राज्य के व्यापार की उन्नति करने की ओर न होकर चुंगी द्वारा अधिक से अधिक आय की ओर है। आयात और निर्यात दोनों पर चुङ्गी लगती है। भोग-विलास तथा आराम और फैशन वाली वस्तुओं पर चुङ्गी भी अधिक



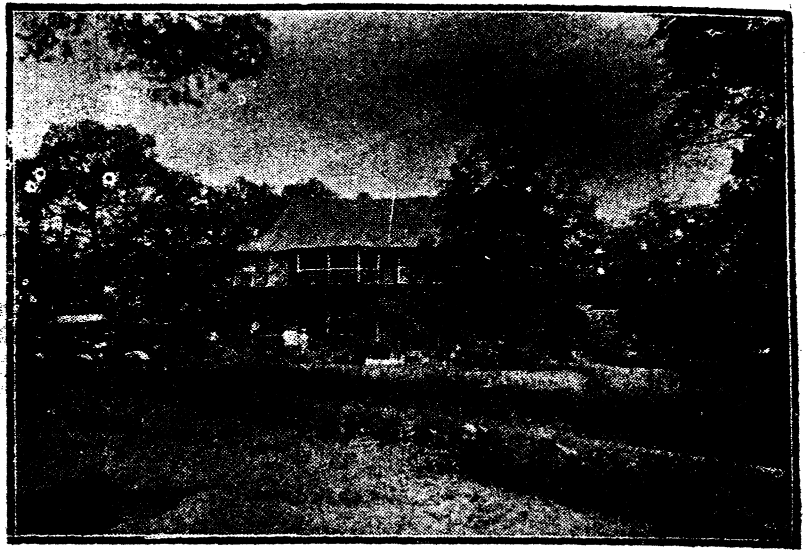
नैपाल निवासी—ये लोग अपने अतिथि का बहुत आदर-सत्कार करते हैं।



कमाण्डर इनचीफ धीर शमसेर जंग की स्टेच्यु



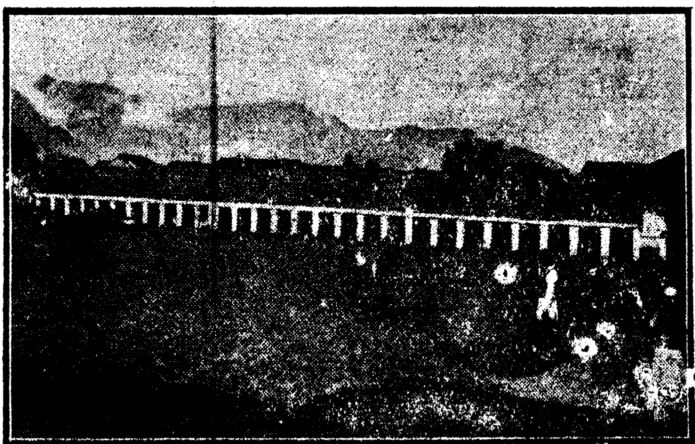
घंटाघर और कालेज



नैपाल रेजीडेंट का बँगला



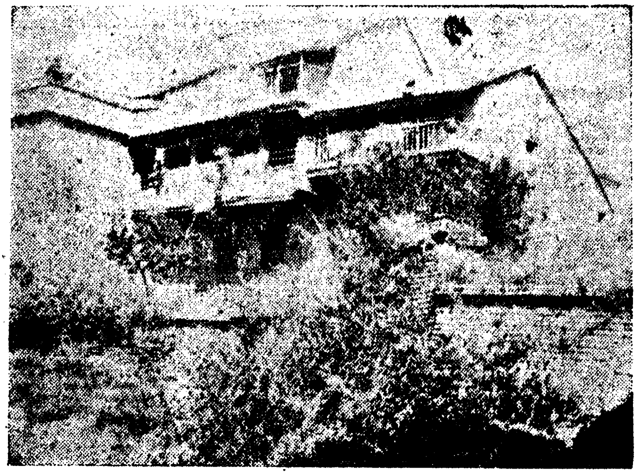
आदिघाट



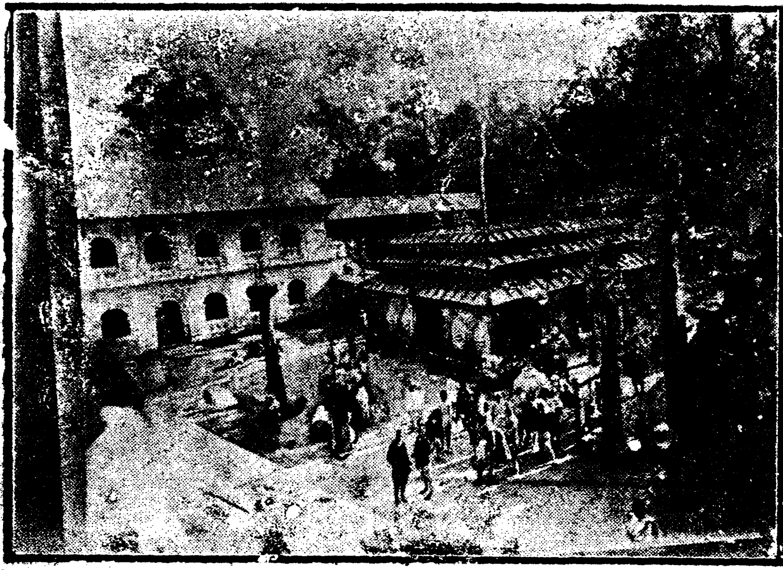
रिसाला का तबेला



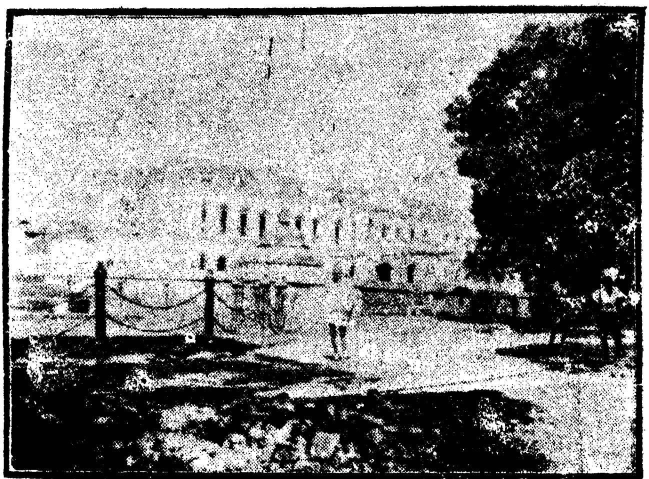
इन्द्रचौक



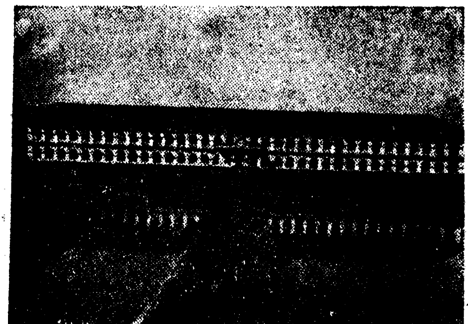
नेपाल का साधारणघर



बाग्मती नदी के किनारे गुह्येश्वरी का मन्दिर



वीर स्पताल टूँडी खेल



काठमांडू स्कूल

है और आवश्यक दैनिक प्रयोग वाली वस्तुओं पर चुङ्गी कम है। प्रत्येक मंडी, हाट, बाज़ार और व्यापारिक मार्ग में चुङ्गीघर बनाये गये हैं। कभी कभी चुंगी ठेके पर लगा कर वसूल की जाती है। लकड़ी, हाथी दांत, तांबा, नमक, तम्बाकू आदि कुछ वस्तुओं का व्यापार सरकारी रूप से होता है इन वस्तुओं के व्यापार की आज्ञा सरकारी कचेहरियों द्वारा उन लोगों को दी जाती है जो नैपाल सरकार के भक्त हैं। इनके अतिरिक्त दूसरी वस्तुओं के व्यापार की स्वतंत्रता है केवल आयात और निर्यात चुंगी चुकानी पड़ती है। चुंगी प्रत्येक स्थान तथा वस्तु की अलग है। राज्य में स्थानीय चुंगी तो कहीं संख्या पर और कहीं भार पर लगाई जाती है।

भारतवर्ष और नैपाल राज्य के मध्य चम्पारन ज़िला होकर मुख्य व्यापार होता है। इस व्यापारिक मार्ग के एक सिरे पर पटना और दूसरे पर काठमंडू है। यह मार्ग सिगौली की फौज़ी छावनी से आरम्भ होकर रक्सौल स्थान पर इण्डो-नैपाली सीमा का पार करता है। समरबासा हतौरा, भीमफेदी थानकोट नगरों होता

[शेष कवर के दूसरे पृष्ठ पर देखिये]